



कारवां

अंक : अक्टूबर-दिसंबर, 2025



मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, पूर्व रेलवे, सियालदह

मंडल रेल प्रबंधक, सियालदह की अध्यक्षता में हिंदी दिवस के अनुपालन की झलकियाँ



कारवां

राजभाषा त्रैमासिक पत्रिका, अंक : अक्टूबर-दिसंबर, 2025

संरक्षक

श्री राजीव सक्सेना

मंडल रेल प्रबंधक



उप-संरक्षक

श्री राजेश कुमार

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं

अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.)



संपादक

श्रीमती रूमा अड्डा

राजभाषा अधिकारी (प्रभारी)



संपादन मंडल

श्री कन्हैया यादव

श्री शिव प्रसाद साव

श्री शशिभूषण गुप्ता

श्री अभिषेक कुमार प्रसाद

श्रीमती बेला कश्यप

छायांकन : श्री समीर कुमार घोष

संपर्क सूत्र :

राजभाषा अनुभाग
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
पूर्व रेलवे, सियालदह,
कोलकाता-700014

इस अंक में

- | | | |
|----|---|---------------------|
| 5 | मेरी मलेशिया यात्रा : परिवहन व्यवस्था के आईने में एक अनुभव | कुन्दन कुमार सहाय |
| 6 | इंतजार-आशा | जसराम मीणा |
| 7 | रेलवे संरक्षा : सियालदह मंडल के बढ़ते कदम | सुजीत कुमार सिन्हा |
| 9 | रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल: एक व्यापक विश्लेषण | कार्तिक सिंह |
| 13 | सिमटती भाषाएं लुप्त होती बोलियां | श्रीमती रूमा अड्डा |
| 15 | मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता : इसके लक्षण और विकार | डॉ. झुनु मुखर्जी |
| 17 | रवीन्द्रनाथ ठाकुर : एक विराट सत्ता | कन्हैया यादव |
| 20 | हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक धरोहर कोलकाता की ट्राम सेवा | राकेश कुमार |
| 22 | सुख क्या है - यह जानें | शिव प्रसाद साव |
| 24 | सुनीता विलियम्स : अंतरिक्ष में साहस की प्रतीक महिला | आत्रेयी मल्लिक |
| 26 | तनावमुक्ति के सूत्र | शशि भूषण गुप्ता |
| 28 | घृणित सोच का परिणाम पहलगाम नरसंहार | रवि प्रताप सिंह |
| 29 | सियालदह मंडल में वातानूकूलित लोकल ट्रेन का परिचालन | आनंद मोहन |
| 30 | मजदूर दिवस का इतिहास और प्रासंगिकता | अभिषेक कुमार प्रसाद |
| 32 | भारत के स्वतंत्रता संग्राम में वीरतापूर्वक लड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानी | साहेब सिंह |
| 34 | भारत की सैन्य ताकत कितनी मजबूत | मनोज चौधरी |
| 36 | सरदार पटेल विशेष : एकता और वफादारी के प्रतीक 'लौह पुरुष' आज भी क्यों हैं जरूरी? | अपर्णा |
| 39 | महाकुम्भ : एक स्मरण | रितेश कश्यप |

पत्रिका निःशुल्क वितरण के लिए है। पत्रिका में प्रस्तुत विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।



श्री राजीव सक्सेना
Sri Rajeev Saxsena



मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे, सियालदह
Divisional Railway Manager
Eastern Railway, Sealdah



संरक्षक की कलम से...

भाषा की दृष्टि से भारत एक समृद्ध राष्ट्र है। सभी भारतीय भाषाएं राष्ट्र की धरोहर हैं। यह गर्व की बात है कि भारत राष्ट्र में अनेक समृद्ध भाषाओं का सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व है। हिंदी के साथ ही भारत के सभी भाषाओं का विकास, संरक्षण एवं संवर्धन देश हित में हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। भारतीय रेल न केवल संचार का एक सशक्त माध्यम है बल्कि भाषायी एकता को सुदृढ़ कर एक मजबूत राष्ट्र बनाने में अहम भूमिका निभाती है।

पूर्व रेलवे का सियालदह मंडल भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण दायित्व निभाते हुए निरंतर सक्रिय एवं समर्पित रूप से कार्य कर रहा है, अधिकाधिक कार्य हिंदी में किया जा रहा है।

यह हर्ष का विषय है कि सियालदह मंडल की हिंदी पत्रिका 'कारवां' का दिसम्बर, 2025 अंक का प्रकाशन हो रहा है। मेरा मानना है कि 'कारवां' पत्रिका सियालदह मंडल में हिंदी के प्रचार-प्रसार में सकारात्मक परिवेश तैयार करने में सक्षम होगी।

यह पत्रिका हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों के हिंदी लेखन प्रतिभा को मंच प्रदान करने के साथ-साथ सियालदह मंडल में होने वाले विभिन्न विकासशील कार्यक्रमों की झलकियां भी पेश करती है। आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान करने में समर्थ होंगे और हिंदी में कार्य करने की क्षमता में विकास का मार्ग प्रस्तुत करने में सहायक होंगे।

सियालदह मंडल के रेल परिवार को नव वर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

(राजीव सक्सेना)
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे, सियालदह

श्री राजेश कुमार
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.)

पूर्व रेलवे
सियालदह मंडल
कोलकाता-700 014
Eastern Railway
Sealdah Division
Kolkata-700 014



उप संरक्षक की कलम से...

हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर, 1949 को गहन विचार-विमर्श के बाद अपनाया गया। इस दिन को हम हिंदी दिवस के रूप में प्रतिवर्ष मनाते हैं। संघ का यह कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार वृद्धि करें, उसका विकास करें ताकि वह भारत के सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों का माध्यम बन सके। पूर्व रेलवे का सियालदह मंडल संघ का महत्वपूर्ण कार्यालय होने के नाते हिंदी के उत्तरोत्तर विकास को सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध है।

‘कारवां’ पत्रिका सियालदह मंडल में हिंदी के प्रचार-प्रसार की गति को तेज करने में अपनी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस पत्रिका में इस मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों की रचनाएं प्रकाशित होती हैं, साथ ही साथ इस मंडल की गतिविधियों की प्रमुख झलकियां भी देखने को मिलती है। इस प्रकार यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यालय में हिंदी के विकास को सुनिश्चित करती है बल्कि प्रतिभाओं को मंच भी प्रदान करती है।

मुझे आशा है कि इस बार का दिसम्बर, 2025 अंक के लेख आप सभी को पसंद आएंगे और आपको रेल संबंधी जानकारी प्रदान करते हुए मनोरंजन भी करेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं आप सभी लेखकों, संपादन मंडल और पाठकों को शुभकामनाएं देता हूँ।

आप सभी को नववर्ष, 2026 की हार्दिक शुभकामनाएं!

राजेश कुमार
(राजेश कुमार)
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (इंफ्रा.)
पूर्व रेलवे, सियालदह

श्रीमती रूमा अड्डा
राजभाषा अधिकारी (प्रभारी)



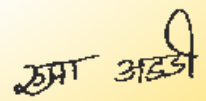
पूर्व रेलवे
सियालदह मंडल
कोलकाता-700 014
Eastern Railway
Sealdah Division
Kolkata-700 014

संपादक की कलम से ...



भारत एक सशक्त और विश्व का सबसे बड़ा गतिशील लोकतंत्रिक देश है। लोकतंत्र में जनता द्वारा चुनी हुई सरकार होती है। भारत संघ के महत्वपूर्ण विभाग और कार्यालय होने के नाते यह हमारा गुरुतर दायित्व है कि हम सरकारी नीतियों और अपने कार्यकलापों को जनता की भाषा अर्थात् राजभाषा हिंदी में उन तक पहुँचाएं। 14 सितम्बर 1949 को व्यापक चर्चा और आम सहमति से भारत संघ की राजभाषा हिंदी को चुना गया और सरकारी कार्यालयों को यह दायित्व दिया गया कि वे हिंदी का प्रसार वृद्धि करें ताकि वह भारत की मिलीजुली संस्कृति के सभी तत्वों के अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। पूर्व रेलवे का सियालदह मंडल अपनी इस जिम्मेदारी के प्रति सर्वदा सचेत और सतर्क रहा है। सियालदह मंडल के रेल क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग-प्रसार में गति लाने की दृष्टि से पत्रिकाओं का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण कदम है। इस क्रम में यहाँ से प्रकाशित 'कारवां' पत्रिका हिंदी के विकास की गति को तीव्र करने में अपनी सार्थक भूमिका अदा करती है।

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मंडल रेल प्रबंधक के सक्षम एवं कुशल नेतृत्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं विकास में समर्पित रूप से काम तो कर ही रहे हैं, साथ ही साथ अपना लेख, कविता और निबंध आदि के माध्यम से 'कारवां' पत्रिका के प्रकाशन को जारी रखे हुए हैं। इस दिसम्बर, 2025 अंक में उनके द्वारा रचित कविता, लेख और कहानी आदि आप सभी सुधी पाठकों को पसंद आएगी और साथ ही आपकी कार्यालयी ज्ञान को संवर्धित करेगी। आप से उम्मीद रहेगी की आप अपनी महत्वपूर्ण राय से हमें अवगत करा कर पत्रिका के रूप को सवारने में अपनी भूमिका का निर्वाह करेंगे। आप सभी को नववर्ष, 2026 की प्रीति और शुभेच्छा सहित।


(श्रीमती रूमा अड्डा)
राजभाषा अधिकारी (प्रभारी)
पूर्व रेलवे, सियालदह

मेरी मलेशिया यात्रा : परिवहन व्यवस्था के आईने में एक अनुभव

कुन्दन कुमार सहाय
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी
पूर्व रेलवे, सियालदह



फरवरी 2025 में मुझे मलेशिया की यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। यह यात्रा केवल पर्यटन तक सीमित नहीं रही, बल्कि वहाँ की जीवनशैली, सांस्कृतिक विविधता तथा विशेष रूप से आधुनिक परिवहन व्यवस्था को निकट से देखने और समझने का एक महत्वपूर्ण अनुभव भी सिद्ध हुई। मलेशिया एक ऐसा देश है जहाँ नियोजन, अनुशासन और तकनीक का प्रभाव दैनिक जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

मेरी यात्रा की शुरुआत कुआलालंपुर से हुई, जो मलेशिया की राजधानी होने के साथ-साथ देश का प्रमुख परिवहन केंद्र भी है। कुआलालंपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा विश्वस्तरीय सुविधाओं से युक्त है और शहर को देश के विभिन्न भागों से कुशलतापूर्वक जोड़ता है। शहर में प्रवेश करते ही सुव्यवस्थित सड़कें, समयबद्ध सार्वजनिक परिवहन और स्वच्छ वातावरण विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं।

मलेशिया की शहरी परिवहन व्यवस्था अत्यंत प्रभावशाली है। कुआलालंपुर में एलआरटी (Light Rail Transit), एमआरटी (Mass Rapid Transit) और मोनोरेल जैसी आधुनिक रेल प्रणालियाँ कार्यरत हैं। ये रेल सेवाएँ समयपालन, स्वच्छता और यात्रियों की सुविधा की दृष्टि से अत्यंत सराहनीय हैं। स्टेशन सुव्यवस्थित, डिजिटल सूचना प्रणाली से युक्त तथा दिव्यांग-अनुकूल पाए गए। टिकट प्रणाली पूर्णतः इलेक्ट्रॉनिक है, जिससे यात्रियों को सुविधा होती है और मानवीय हस्तक्षेप न्यूनतम रहता है।

यदि भारत और मलेशिया की रेल प्रणालियों की तुलना की जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों देशों की आवश्यकताएँ और पैमाना भिन्न हैं। भारतीय रेल विश्व की सबसे बड़ी रेल प्रणालियों में से एक है, जो प्रतिदिन

करोड़ों यात्रियों को सेवा प्रदान करती है। जहाँ भारतीय रेल की प्रमुख शक्ति उसका विशाल नेटवर्क, सामाजिक दायित्व तथा दूर-दराज क्षेत्रों तक पहुँच है, वहीं मलेशिया की रेल प्रणाली सीमित क्षेत्र में उच्च तकनीक, अनुशासन और दक्षता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

भारत में हाल के वर्षों में मेट्रो रेल परियोजनाएँ, वंदे भारत जैसी आधुनिक ट्रेनों तथा स्टेशन पुनर्विकास योजनाओं के माध्यम से रेल परिवहन में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं। दूसरी ओर, मलेशिया ने शहरी परिवहन को प्राथमिकता देते हुए यातायात नियंत्रण, पर्यावरण संरक्षण और समय प्रबंधन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है। दोनों देशों की परिवहन प्रणालियाँ अपने-अपने सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक संदर्भ में प्रभावी एवं उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

यात्रा के दौरान पुतराजाया और गेंटिंग हाइलैंड्स जैसे स्थलों का भ्रमण भी किया गया। पुतराजाया की योजनाबद्ध बस एवं रेल संपर्क व्यवस्था तथा गेंटिंग हाइलैंड्स तक केबल कार द्वारा यात्रा मलेशिया की परिवहन सोच को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। यहाँ परिवहन को केवल आवागमन का साधन नहीं, बल्कि विकास और पर्यटन का अभिन्न अंग माना गया है।

समग्र रूप से फरवरी 2025 में की गई मेरी मलेशिया यात्रा अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक रही। इस यात्रा ने यह स्पष्ट किया कि किसी भी देश की परिवहन व्यवस्था उसके समग्र विकास की आधारशिला होती है। भारत और मलेशिया, दोनों ही देश अपने-अपने स्तर पर परिवहन, विशेषकर रेल व्यवस्था, को सुदृढ़ बनाने की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहे हैं। यह यात्रा मेरे लिए स्मरणीय होने के साथ-साथ सीख देने वाली भी सिद्ध हुई।

इंतजार - आशा

जसराम मीणा

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक
पूर्व रेलवे, सियालदह



मानवीय जीवन, द्वंद्व और प्रतिद्वंद्व, क्रिया और प्रतिक्रिया, आशा और इंतजार का प्रतिबिम्ब है। इंतजार एक नैराश्य, शंका और आशंका को जन्म देती है। मगर आशा, सकारात्मक भाव का संचार करती है। जब मानवीय जीवन किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में आ जाये, उस समय मानसिक सशक्तता, रचनात्मक और अन्वेषण की क्षमता ही मार्गदर्शक बनकर उचित-अनुचित, सत्य-असत्य और नित्य-अनित्य के भेद को समझने में सहायक होती है। जीवन का द्वंद्व आपको शिथिलता से बचाता है, आपको संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। गुणवत्ता पूर्ण सफल कार्य के लिए आपके जीवन में नवीनता का होना जरूरी है। विशिष्टता, आपको पहचान के साथ-साथ कर्मशीलता प्रदान करती है। “सामान्य” आपको सहजता, सुगमता दे सकता है। मगर कुन्दन, आप चुनौतियों और संघर्ष के पथ पर बढ़कर और चलकर ही बन पाते हैं। इंतजार नहीं “आशा” जीवन का सही बिम्ब है।

भारतीय रेलवे और टिकट निरीक्षक दोनों का अभिभावक एक साथ हुआ है। भारतीय रेलवे में यात्रा करते समय यात्री के जेहन (दिमाग) में पहली छवि जो उभरकर आती है वह टिकट निरीक्षक की होती है, जो यात्री की यात्रा को सुगम, सहज एवं यादगार बनाने में सहायक होता है। टिकट निरीक्षक रेलवे का सबसे महत्वपूर्ण

फ्रंटलाइन स्टाफ होता है। उसकी विश्वसनीयता, दक्षता, कौशलता और कर्म-क्षमता पर सम्पूर्ण रेलवे की छवि निर्भर करती है। लम्बे अरसे से यह देखा गया है कि इस महत्वपूर्ण फ्रंटलाइन स्टाफ की आर्मी में लोगों ने सेंध लगाने का काम किया है, जिससे रेलवे की छवि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। रेलवे यात्री ने भी टिकट निरीक्षक की विश्वसनीयता पर सोचने के लिए मजबूर किया है। टिकट निरीक्षक की विश्वसनीयता को कायम रखने के लिए सियालदह मण्डल ने आज एक अनोखा बैज (Badge) जारी किया है, जो किसी बाहरी और फर्जी व्यक्ति के लिए नकल करना नामुनकिन ही नहीं असंभव होगा। यह बैज, टिकट निरीक्षक की यूनिफार्म का अभिन्न हिस्सा होगा। इसके बिना उसको स्टेशन और ट्रेन में ड्यूटी नहीं दी जाएगी। यदि कोई टिकट निरीक्षक भूलवश बैज नहीं लाता है तो पृथक से स्पेशल बैज (Special Badge) की व्यवस्था की गई है। एक रजिस्टर रखा जायेगा जहां टिकट निरीक्षक ड्यूटी पर आने के बाद Sign On करता है, ताकि कोई भी टिकट निरीक्षक बिना बैज के ट्रेन और स्टेशन पर कार्य नहीं कर सकेगा। सियालदह मण्डल में वर्तमान में 344 टिकट निरीक्षक कार्यरत हैं, सभी को यह बैज लगाना अनिवार्य होगा, अपने कोर्ट और शर्ट पर यह बैज देखा जा सकेगा।

“मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हिंदी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है।”

– बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय

रेलवे संरक्षा : सियालदह मंडल के बढ़ते कदम

सुजीत कुमार सिन्हा
मंडल संरक्षा अधिकारी
पूर्व रेलवे, सियालदह



सियालदह मंडल, जो पूर्ववत पूर्व बंगाल रेलवे का अंग था, 01/04/1952 को पूर्व रेलवे का अभिन्न अंग बना। यह मंडल पूर्व में बांग्लादेश, पश्चिम में हुगली नदी, उत्तर में बांग्लादेश, दक्षिण में सुंदरवन से घिरा है। यह पश्चिम बंगाल के 06 जिलो – उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना, मुर्शिदाबाद, कोलकाता, एवं हावड़ा को अपनी सेवा प्रदान करता है। इसके प्रमुख दर्शनीय स्थलों निम्न हैं – कोलकाता, बैरकपुर, डायमंड हार्बर, दक्षिणेश्वर, कृष्णानगर सिटी, नवद्वीप घाट, मुर्शिदाबाद, पलासी एवं शांतिपुर।

सियालदह मंडल मूलतः पैसेंजर सेवा प्रदान करने वाला रेल मंडल है। यहाँ से प्रतिदिन 1030 पैसेंजर, ईएमयू, मेल/एक्सप्रेस ट्रेने चलती हैं। यह मूलतः कोलकाता महानगर को सेवा प्रदान करती है। यदि अतिशयोक्ति न हो तो यह कहा जा सकता है कि यह कोलकाता नगर की जीवन रेखा है।

यह मंडल प्रतिदिन लगभग 12 लाख यात्रियों को अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचाता है। निश्चित रूप से इस संख्या को अपने गंतव्य तक पहुंचाना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। अपने मूल मंत्र संरक्षा, सुरक्षा एवं समय की पाबंदी को बनाये रखने में इस मंडल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी निष्ठा से दिन रात अपने – अपने कार्यों में लगे हुए हैं।

संरक्षा – हमारा मूलमंत्र है। इसे बनाये रखने के लिए सियालदह मंडल ने कुछ अभूतपूर्व कार्य किये हैं, जो निम्नांकित हैं:-

(क) लोको पायलट की सघन ट्रेनिंग, सक्षमता की जाँच –

LPP एवं ALP संरक्षा की अंतिम बिंदु है। इनकी सक्षमता एवं सतर्कता से होने वाली दुर्घटना से बचा जा सकता है। नये पदोन्नत LP एवं ALP की कर्तव्य के पूर्व सक्षमता जाँच की जाती है। यार्ड की संरचना, महत्वपूर्ण सिग्नल का ज्ञान, सेक्शनल ज्ञान की जाँच प्रश्नोत्तरी के द्वारा की जाती है।

(ख) नये एवं पुराने LP एवं ALP की जोड़ी बनाई जाती है।

(ग) क्रू सदस्यों की आराम के घंटे सुनिश्चित करने हेतु CMS का सहारा लिया जाता है।

(घ) क्रू के पारिवारिक सदस्यों के साथ इंटरैक्शन कार्यक्रम किया जाता है, ताकि वे क्रू के आराम के घंटे की गुणवत्ता को सुनिश्चित कर सकें।

(ङ) विभिन्न प्रकार के तकनीकी ज्ञान, शारीरिक स्वस्थता, पारिवारिक समस्या पर संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं

(च) क्रू सदस्यों की जानकारी को बढ़ाने के लिए राइट हैंड सिग्नल, सेफ्टी चार्ट, गैलॉपिंग ट्रेन पर पुस्तक, सेक्शन वाइज सिग्नल लोकेशन का रोल डायग्राम त्रैमासिक पत्रिका सबक, रिएक्ट, ई ज्ञान मोबाइल ऐप की सुविधा प्रदान की जाती है

(ज) सभी क्रूर लॉबी में CLI की पोस्टिंग की गई है

(झ) CLI की ज्ञानवृद्धि का भी विशेष ख्याल रखा जाता है, उनके लिए रीफ्रेशर कोर्स, IREEN/नासिक में ट्रेनिंग की व्यवस्था की जाती है

2. लोड का सिक्योरिंग (ट्रेनों की स्थिरता को संरक्षित करना)

(क) ट्रेनों की स्थिरता को संरक्षित करने के लिए

गुटके एवं चेन का इस्तेमाल किया जाता है। सियालदह मंडल ने व्यावहारिक सोच को अपनाते हुए सभी प्रमुख यार्डों में “यंत्र बॉक्स” रखने की व्यवस्था की है जिससे रेल कर्मचारियों को चेन, गुटके ढोने की झंझट से छुटकारा मिला है।

(ख) शंटिंग की कैमरे द्वारा मॉनिटरिंग:

सियालदह डिविजन के 10 प्रमुख यार्ड सियालदह कोलकाता, चितपुर, नैहाटी, रानाघाट, कल्याणी, कृष्णा नगर, कामागाता मारू बजबज, टीटागढ़ एवं न्यू अलीपुर में परिचालन विभाग के अंतर्गत आने वाले स्टॉफ प्वाइंट्समैन को कैमरे प्रदान किए गए हैं जिसका व्यवहार उन्हें शंटिंग के दौरान करना होता है इन कैमरा के द्वारा लिए गए तस्वीरों को सियालदह कंट्रोल के द्वारा मॉनिटरिंग की जाती है एवं उन्हें समय-समय पर संरक्षा से संबंधित निर्देश दिए जाते हैं इससे शंटिंग के दौरान होने वाले डिरेलमेंट में अभूतपूर्व सुधार भी हुआ है।

आग से बचाव:-

सियालदह मंडल में आग की दुर्घटना होने के महत्वपूर्ण कारक हैं -

अनाधिकृत दुकान जो स्टेशन प्लेटफार्म पर या प्लेटफार्म फेंसिंग के बाहर है, कूड़े कचरे द्वारा जो स्टेशन परिसर या रेल लाइन के किनारे फेंक जाते हैं एवं बिजली की शार्ट सर्किट।

इन समस्याओं से निजात पाने के लिए सियालदह मंडल ने बोध पूर्ण कार्य किए हैं, जिसमें कुछ अग्निशामक यंत्र की उपलब्धता को सुनिश्चित करना एवं उनकी उचित देखभाल करना, अग्निशामक यंत्र को चलाने की ट्रेनिंग देना, स्थानीय लोगों को प्रिंट मीडिया, वीडियो वॉल, पी. ए. सिस्टम, नुक्कड़ नाटक, पंपलेट इत्यादि द्वारा जागरूक करना।

कूड़े कचरे की सफाई को सुनिश्चित करना, अनाधिकृत बिजली के तारों को हटाना, अनाधिकृत दुकानों से रेल परिसर को खाली करना।

समपार फाटक के पास होने वाली दुर्घटना :-

समपार फाटक रेलवे के परिचालन एवं संरक्षा के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। वर्तमान में सियालदह मंडल के

पास 383 समपार फाटक हैं, जिसमें 367 इंटरलॉक है एवं 16 नॉन इंटरलॉक हैं। इसकी संरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए 24 स्थान पर आरपीएफ की व्यवस्था, 12 जगह पर कैमरों की व्यवस्था, 230 ELB एवं 325 पर स्लाइडिंग बैरियर की व्यवस्था की गई है। गत वर्ष 03 फाटक (97/E, 92/E, 82/E) को नॉन इंटरलॉक से इंटरलॉक किया गया एवं 2025-26 में 6 फाटकों की NI से इंटरलॉक की योजना बनाई गई है। 10 समपार फाटकों को LHS बनाकर बंद किया गया है।

अनाधिकृत रूप से रेल की पटरियों को पार करना:

सियालदह मंडल भारत के सबसे पुराने महानगर कोलकाता के वासियों को सेवा प्रदान करता है। कोलकाता शहर की संरचना इस तरह से बन गई है कि लोगों के मोहल्ले रेल पटरियों के दोनों ओर स्थित हैं। रेलवे संभावित स्थानों को चिन्हित कर ROB, LHS का निर्माण कर रही है। इन सबके बावजूद लोग रेल की पटरियों को अनाधिकृत रूप से मोटरसाइकिल, टोयो, चार पहिया वाहनों से पार करते हैं जो पूर्णतः असुरक्षित हैं एवं यदाकदा दुर्घटना घटित हो जाती है।

सियालदह मंडल सभी सामान्य जनों से आग्रह करता है कि वह अनाधिकृत रूप से रेल की पटरियों को पार ना करें। रेल की पटरियों को पार करने के लिए ROB, LHS का इस्तेमाल करें।

सियालदह मंडल ने 435 LHB AC कोच एवं 163 ICF AC कोच में FDDB को प्रतिस्थापित किया है एवं 69 पावर कार एवं 26 पैट्री कार में FDSS की प्रणाली को लगाकर सियालदह मंडल से चलने वाली सभी ट्रेनों को अग्नि से सुरक्षा प्रदान करने का 100% लक्ष्य प्राप्त किया है।

सियालदह मंडल रेल एवं यात्रियों की संरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। यह मंडल सामान्य जनों से भी अपेक्षा करता है कि वह रेलवे के दिशा निर्देशों का पालन करें एवं रेल तथा अपनी संरक्षा को सुनिश्चित करें। ऐसा करने पर ही हम गर्व से कह सकेंगे कि भारतीय रेल शत प्रतिशत संरक्षित है।

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल: एक व्यापक विश्लेषण



कार्तिक सिंह
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक
पूर्व रेलवे, मालदा

भारतीय रेलवे देश का सबसे बड़ा परिवहन तंत्र है, जो प्रतिदिन लाखों यात्रियों और भारी मात्रा में माल परिवहन करता है। इस विशाल नेटवर्क में कभी-कभी दुर्घटनाएँ, सामान की हानि, देरी या अन्य विवाद उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे मामलों के समाधान के लिए रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल (Railway Claims Tribunal - RCT) की स्थापना की गई। यह ट्रिब्यूनल यात्रियों, माल भेजने वालों, और अन्य संबंधित पक्षों को न्यायिक राहत प्रदान करता है।

1890 में, भारतीय रेलवे अधिनियम ब्रिटिश संसद द्वारा पारित किया गया था। इस कानून का उद्देश्य रेलवे से संबंधित विभिन्न मामलों का निष्पादन करना था। स्वतंत्रता के बाद, यह महसूस किया गया कि वर्तमान समय में लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिनियम में कुछ बदलाव किए जाने चाहिए। इसलिए 1890 के अधिनियम के कुछ प्रावधानों को बनाए रखते हुए, अन्य प्रावधानों को निरर्थक कर, नए प्रावधानों को प्रतिस्थापित करते हुए, रेलवे अधिनियम, 1989 नामक एक नया कानून बनाया गया, जो 1 जुलाई, 1990 से लागू हुआ। इस अधिनियम की व्यापक विशेषताएँ यह हैं कि रेलवे को कई जोनों में पुनर्गठित किया गया तथा प्रत्येक जोन के लिए एक महाप्रबंधक का प्रावधान रखा गया। यात्रियों और माल की ढुलाई की दरें तय करने का अधिकार केंद्र सरकार के पास था। माल आदि के नुकसान, क्षति और आकस्मिक मृत्यु और घायल होने पर रेलवे द्वारा मुआवजे का प्रावधान रखा गया। माल आदि के वाहक के रूप में रेलवे की मौद्रिक देयता के संबंध में विशेष प्रावधान किए गए। रेलवे प्रशासन के खिलाफ दावों के त्वरित निपटान के लिए रेलवे दावा न्यायाधिकरण अधिनियम, 1987 बनाया गया था। यद्यपि रेलवे प्रशासन ने माल आदि के प्रेषक/प्रेषिती को क्षतिपूर्ति देने तथा जीवन की हानि के लिए क्षतिपूर्ति का रास्ता बनाया है, फिर भी लोग प्रायः संतुष्ट नहीं होते थे तथा न्यायालयों में चले जाते थे, जहां दावों का निर्णय करने में बहुत अधिक समय लगता था तथा मुकदमेबाजी अनिश्चित काल तक खिंच जाती थी। इसलिए, दावों के शीघ्र निपटान की आवश्यकता महसूस की गई, जिसके परिणामस्वरूप दावा न्यायाधिकरण की स्थापना की गई, जो विशेष रूप से ऐसे दावों का शीघ्र निपटान करता है। परिणामस्वरूप, न्यायालयों का बोझ कम हुआ तथा शीघ्र राहत उपलब्ध हुई। यहां तक कि किराए तथा माल की वापसी को भी न्यायाधिकरण के दायरे में लाया गया।

आरसीटी अधिनियम रेलवे द्वारा ढोने के लिए सौंपे गए पशुओं या माल की हानि, विनाश, क्षति, गिरावट या न दिए जाने अथवा किराए या माल की वापसी अथवा रेलवे दुर्घटनाओं या अप्रिय घटनाओं के परिणामस्वरूप यात्रियों की मृत्यु या चोट के लिए क्षतिपूर्ति तथा उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक मामलों के लिए रेलवे प्रशासन के विरुद्ध दावों की जांच करने तथा उनका निर्धारण करने के लिए रेलवे दावा न्यायाधिकरण की स्थापना का प्रावधान करता है।

अधिनियम की योजना से पता चलता है कि इसमें न्यायाधिकरण की स्थापना, इसकी पीठों, अधिकारियों और कर्मचारियों, उनकी अवधि, पात्रता, न्यायाधिकरण के अधिकार क्षेत्र, शक्तियों और प्राधिकार, इसकी प्रक्रिया, इसके आदेशों और अपीलों के निष्पादन के लिए प्रावधान किए गए हैं। इस प्रकार, यह अधिनियम एक आत्मनिर्भर अधिनियम है,

जिसने आम जनता की समस्याओं का समाधान किया है।

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल की स्थापना:

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल की स्थापना 'रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल अधिनियम, 1987' के तहत की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य रेलवे प्रशासन के खिलाफ यात्रियों और माल भेजने वालों के दावों के निपटारे के लिए एक प्रभावी और त्वरित न्यायिक प्रक्रिया प्रदान करना है। चूंकि न्यायालयों और दावा आयुक्तों के समक्ष मुकदमेबाजी बहुत लंबी होती है, इसलिए ऐसे दावों के शीघ्र निर्णय के लिए एक विशेष न्यायाधिकरण स्थापित करने का निर्णय लिया गया है। देश के विभिन्न भागों में न्यायिक और तकनीकी सदस्यों के साथ पीठों को इस तरह के दावा न्यायाधिकरण की स्थापना से रेल दुर्घटनाओं के पीड़ितों को और रेल परिवहन में जिनके सामान खो गए हैं या क्षतिग्रस्त हो गए हैं, उन्हें शीघ्र मुआवजा भुगतान के माध्यम से रेल उपयोगकर्ताओं को राहत मिले। यह ट्रिब्यूनल रेलवे से संबंधित दावों सिविल अदालतों से हटाकर एक विशेष न्यायाधिकरण में स्थानांतरित करता है, जिससे मामलों का शीघ्र निपटारा हो सके।

उद्देश्य:

1. दावों का त्वरित निपटारा – सामान्य न्यायालयों में मामलों के लंबित रहने की समस्या को हल करना।
2. यात्रियों और व्यापारियों को राहत – रेलवे द्वारा होने वाले किसी भी नुकसान, दुर्घटना या देरी की स्थिति में उचित मुआवजा दिलाना।
3. रेलवे प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करना – रेलवे द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाना।

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल के क्षेत्राधिकार:

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल निम्नलिखित प्रकार के मामलों की सुनवाई करता है:

1. दुर्घटना मुआवजा (Accident Compensation Claims) – रेलवे अधिनियम, 1989 के तहत यदि किसी ट्रेन दुर्घटना में किसी यात्री की मृत्यु हो जाती है या उसे गंभीर चोट लगती है, तो प्रभावित व्यक्ति या उसके परिवार को मुआवजा देने का प्रावधान है।
2. संपत्ति या माल की क्षति (Loss of Goods or Property Claims) – यदि रेलवे द्वारा भेजे गए सामान या पार्सल के नुकसान, चोरी, या देरी के कारण नुकसान होता है, तो प्रभावित पक्ष ट्रिब्यूनल में दावा कर सकता है।
3. यात्रियों की क्षति संबंधी दावे (Passenger Claims) – यदि किसी यात्री का सामान रेलवे के कारण गुम हो जाता है या क्षतिग्रस्त हो जाता है, तो वह ट्रिब्यूनल में मुआवजा मांग सकता है।
4. रेलवे किराए और शुल्क संबंधी विवाद (Fare and Freight Disputes) – यदि कोई व्यक्ति रेलवे द्वारा लगाए गए किराए या मालभाड़े से असंतुष्ट है, तो वह ट्रिब्यूनल में अपील कर सकता है।

मुख्यालय और शाखाएँ:

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल का मुख्यालय (मुख्य पीठ) नई दिल्ली में स्थित है और इसके देशभर में कई पीठ हैं, ताकि लोगों को अपने दावों के निपटारे के लिए लंबी दूरी तय न करनी पड़े, जिसका विवरण निम्नवत है -

क्रम सं.	ट्रिब्यूनल की पीठ	पीठ का क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार
1.	अहमदाबाद	गुजरात, संघ शासित प्रदेश दीव।
2.	बैंगलोर	कर्नाटक।
3.	भोपाल	मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़।

कारवां

4.	भुवनेश्वर	उड़ीसा।
5.	मुंबई	i) महाराष्ट्र के बॉम्बे, थाणे, रायगढ़, पुणे, नासिक, अहमदनगर, सतारा, रत्नागिरी, सिंधीदुर्ग, कोल्हापुर, सांगली, सोलापुर, धुले, औरंगाबाद, बीड जिले। ii) दादरा और नगर हवेली के केंद्र शासित प्रदेश। iii) गोवा।
6.	नागपुर	महाराष्ट्र के सभी जिले, सिवाय उनके जो क्रम संख्या 5 के सामने कॉलम (3) के मद (i) में शामिल हैं।
7.	चंडीगढ़	पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़।
8.	कोलकाता	पश्चिम बंगाल, केंद्र शासित प्रदेश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह।
9.	गुवाहाटी	असम, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड।
10.	एर्नाकुलम	केरल, केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप।
11.	गोरखपुर	उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले - गोरखपुर, देवरिया, बलिया, गाजीपुर, आजमगढ़, मऊ, बस्ती, सिद्धार्थनगर, मिर्जापुर, रॉबर्ट्सगैंग, जौनपुर, फैजाबाद, गोंडा, बहराईच, वाराणसी, महाराजगंज, कुशीनगर, श्रावस्ती, संत कबीर नगर, चंदौली, संत रविदास नगर, बलरामपुर और अम्बेडकर नगर।
12.	गाजियाबाद	उत्तर प्रदेश राज्य के आगरा, बुलन्दशहर, मोरादाबाद, बिजनौर, मथुरा, गाजियाबाद, मेरठ, अलीगढ़ और सहारनपुर जिले, ज्योर्तिबा फुले नगर (अमराहा), गौतमबुद्धनगर (नोएडा), महा माया नगर (हाथरस), मुजफ्फरनगर, रामपुर, पीलीभीत और मैनपुरी। उत्तरांचल राज्य के हरिद्वार और देहरादून जिले।
13.	लखनऊ	लखनऊ उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल के सभी जिले, सिवाय उनके जो क्रम संख्या 11 और 12 के सामने कॉलम (3) में शामिल हैं।
14.	जयपुर	राजस्थान।
15.	नई दिल्ली	केंद्र शासित प्रदेश दिल्ली।
16.	पटना	बिहार।
17.	रांची	झारखंड।
18.	चेन्नई	तमिलनाडु और केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी।
19.	सिकंदराबाद	आंध्र प्रदेश।

कारवां

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल में दावा दायर करने की प्रक्रिया :

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल में दावा दायर करने की प्रक्रिया सरल और सुव्यवस्थित है। इसके लिए निम्नलिखित चरणों का पालन करना होता है:

1. दावा दाखिल करना (Filing the Claim)-आवेदक को एक निर्धारित प्रारूप में दावा याचिका भरनी होती है। आवश्यक दस्तावेज जैसे टिकट, माल की रसीद, मेडिकल प्रमाणपत्र (यदि कोई दुर्घटना हुई हो), आदि संलग्न करने होते हैं। दावा रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल की संबंधित शाखा में प्रस्तुत किया जाता है।
2. शुल्क भुगतान (Payment of Fees)- दुर्घटना मुआवजा दावों में कोई शुल्क नहीं लिया जाता। अन्य दावा के मामले में राशि के आधार पर एक मामूली शुल्क देना होता है, जो इस प्रकार है-

क्र.सं	दावों का मूल्य	माल दावे के लिए देय शुल्क
1.	1 से 100	₹ 10.00
2.	101 से 500	₹ 10.00 के साथ 100 रुपये से अधिक राशि पर 9%
3.	501 से 1,000	₹ 46.00 प्लस 500 रुपये से अधिक राशि पर 8%
4.	1001 से 5,000	₹ 83.00 प्लस 1,000 रुपये से अधिक राशि पर 7%
5.	5001 से 20,000	₹ 366.00 प्लस 5,000 रुपये से अधिक राशि पर 6%
6.	20,001 से 30,000	₹ 1266.00 प्लस 20,000 रुपये से अधिक राशि पर 5%
7.	30,001 से 40,000	₹ 1766.00 प्लस 20,000 रुपये से अधिक राशि पर 4%
8.	40,001 से 50,000	₹ 2166.00 प्लस 40,000 रुपये से अधिक राशि पर 3%
9.	50,001 से 1,00,000	₹ 2466.00 प्लस 50,000 रुपये से अधिक राशि पर 1%
10.	100,000 से ऊपर	₹ 2966.00 प्लस 1/2% रु. 100,000 से अधिक राशि पर

3. सुनवाई और निपटारा (Hearing and Settlement)-ट्रिब्यूनल दोनों पक्षों (आवेदक और रेलवे) की दलीलें सुनता है।

यदि रेलवे जिम्मेदार पाया जाता है, तो उसे उचित मुआवजा देने का आदेश दिया जाता है। यदि किसी पक्ष को निर्णय पर आपत्ति हो, तो वह उच्च न्यायालय में अपील कर सकता है।

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल की संरचना:

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल में दो प्रकार के सदस्य होते हैं:

1. न्यायिक सदस्य (Judicial Member) – यह आमतौर पर कोई सेवानिवृत्त न्यायाधीश या कानून विशेषज्ञ होते हैं।
2. तकनीकी सदस्य (Technical Member) – यह रेलवे से जुड़े कोई वरिष्ठ अधिकारी होते हैं, जो रेलवे की प्रक्रियाओं की गहरी समझ रखते हैं।

रेलवे क्लेम ट्रिब्यूनल यात्रियों और व्यापारियों के लिए एक महत्वपूर्ण न्यायिक निकाय है, जो रेलवे के खिलाफ उत्पन्न होने वाले विवादों का त्वरित और न्यायसंगत समाधान प्रदान करता है।

सिमटती भाषाएं लुप्त होती बोलियां

श्रीमती रूमा अड्डी
राजभाषा अधिकारी (प्रभारी)
पूर्व रेलवे, सियालदह



किसी इंसान के जीवन में मातृभाषा की भूमिका बेहद अहम होती है। वो भाषा उसके हृदय की गहराइयों में बैठी होती है। उसकी मातृभाषा ही उसके बौद्धिक विकास की जमीन तैयार करती है। हर व्यक्ति की अपनी भाषा दरअसल उसकी दुनिया होती है। ऐसी दुनिया जिसमें सिर्फ भूगोल ही शामिल नहीं बल्कि इतिहास भी है और संस्कृति भी है। जिसमें परंपरा भी शामिल है और सदियों का अपना विशिष्ट ज्ञान भी। जिस तरह नदियां अपने उद्गम और अपने प्रवाह वाले क्षेत्रों की पूरी संस्कृति और पर्यावरण के अथाह गुणों को स्वयं में समाये रखती हैं, भाषाएं भी नदी की ही भांति अपनी परंपरा, सोच, अपने दर्शन, भूगोल और इतिहास के साथ ही समूची संस्कृति को लेकर प्रवाहित होती हैं।

साल 2011 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में 121 प्रमुख भाषाएं और 544 अन्य भाषाएं हैं। इनमें से 22 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में जगह दी गई है। वहीं 19500 से अधिक बोलियां हैं। सरकारी नीतियों के अनुसार कम से कम 10 हजार लोग अगर किसी भाषा को बोलते हैं, तभी उसे भाषा की सूची में शामिल किया जा सकता है।

भारत के संविधान में हर वर्ग को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति को संरक्षित करने का अधिकार दिया गया है। हालांकि वडोदरा के भाषा शोध और प्रकाशन केंद्र के सर्वे के मुताबिक पिछले 60 साल में देश में 20 फीसदी बोलियां विलुप्त हो गई हैं। एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार हर दो सप्ताह बाद दुनिया की एक भाषा मर रही है। पहले जहां हर तीन महीने के अंतराल पर एक भाषा की मौत की खबर आती थी, वहीं 2019 के बाद इस गति में तेजी आयी है। इस दर से हर वर्ष दुनिया से करीब नौ

भाषाओं का अस्तित्व खत्म होता जा रहा है। स्पष्ट है कि यदि एक भाषा मर रही है। तो वास्तव में उस भाषा की अपनी विशिष्ट संस्कृति उसकी अपनी सोच और उसका अपना परिवेशबोध मर रहा है। भाषाओं का इस तरह लुप्त होना संस्कृतियों के बहुलवादी स्वरूप का संकुचित होते जाना है।

एक हजार ईस्वी तक दुनियाभर में नौ हजार से कुछ ज्यादा भाषाएं अस्तित्व में थीं। जिनकी संख्या घटते-घटते आज सात हजार के आसपास सिमट गयी हैं। भाषाओं के मरने की यदि यही दर बनी रही तो 21वीं सदी के अंत तक दुनियाभर की करीब तीन हजार भाषाओं का अस्तित्व समाप्त हो चुका होगा। जबकि पश्चिम के कई भाषा और मानवशास्त्री मानते हैं कि यदि भाषाओं के मरने की गति ऐसी ही रही। तो 2200 तक दुनियाभर में महज 100 भाषाएं ही जीवित रह पायेंगी।

भाषाओं के लुप्त होने को लेकर भारत में एक अवधारणा यह है कि जो भाषा क्लिष्ट या कठिन होती जाती है। वह लोक व्यवहार में समाप्त होती जाती है। संस्कृत भाषा के बारे में नहीं कह सकते कि वह समाप्त हो चुकी है। पर उसका चलन घट गया है। परंतु क्या सचमुच भाषाएं केवल इसी वजह से समाप्त हो रही हैं कि वे क्लिष्ट या कठिन होती जा रही हैं? आधुनिक संदर्भों में देखें तो यह तर्क सही नहीं लगता। अंग्रेजी को ही लीजिए। कठिन अंग्रेजी बोलना शान का प्रतीक माना जाता है। इस लिहाज से तो उसे भी चलन से दूर होना चाहिए था पर उल्टे वह बढ़ रही है। भाषाओं और बोलियों के विलुप्त होने के कुछ और भी कारण हैं। देश के दूर दराज इलाके या समुद्र के कई तटीय इलाकों से लोग काम की तलाश में शहरों की तरफ चले गए। जिसकी वजह से उनकी भाषाएं

धीरे-धीरे विलुप्त हो गई। वहीं बंजारा समुदाय के लोग भी जो अपने-अपने क्षेत्रों के मुताबिक कई तरह की बोलियां बोलते थे, उन्होंने भी बीतते समय के साथ शहरों या अन्य स्थानों की भाषा अपना ली। भाषा विलुप्त हो जाने से उसे बोलने वाले पूरे समूह का ज्ञान भी लुप्त हो जाता है। ये एक बड़ा नुकसान है। भाषा या बोलियों के जरिए ही लोग अपनी सामूहिक स्मृति और ज्ञान को जिंदा रखते हैं, उसे बचाकर रखते हैं। इसका नुकसान सांस्कृतिक के साथ ही आर्थिक भी है। आज सभी तकनीक भाषा पर ही आधारित है, ये आर्थिक पूंजी भी है। भाषा बोलने वाले समुदाय नहीं बचेंगे तो भाषा भी नहीं बचेगी, इसीलिए जरूरी है कि ऐसे समुदाय को भी बचाया जाए। उन्हें विकास से जोड़ा जाए। पहाड़ी, तटीय, मैदानी, शहरी या घुमंतू सभी समुदाय के लोगों के लिए अलग योजना बनाने की जरूरत है। सभी भाषाओं को सुरक्षा मिलनी चाहिए।

भारत में कई राज्यों की अपनी भाषा है। महाराष्ट्र हो, केरल हो, गुजरात हो, तमिलनाडु हो या कर्नाटक हो या हिन्दी बोली जाने वाले बिहार-यूपी जैसे कई राज्य। हालांकि शेड्यूल में सिर्फ 22 भाषाओं को ही रखा गया है। संविधान के जरिए फिलहाल इन्हें ही सुरक्षा दी गई है। जबकि जरूरत सभी भाषाओं को बगैर भेदभाव के सुरक्षा देने की है। अगर सरकार ऐसा नहीं करेगी तो धीरे-धीरे कई भाषाएं लुप्त हो जाएंगी। वैश्विक स्तर पर बदली दुनिया में हर देश में एकरूपता बढ़ती जा रही है। संस्कृतियां और उनकी अपनी विशिष्ट परंपराएं रोजाना के व्यवहार का विषय नहीं रहीं। उदारीकरण और वैश्वीकरण के चलते पूरी दुनिया तकरीबन एक तरह के खानपान, पहनावे और एक तरह की भाषा की ओर आकर्षित होती जा रही है। पश्चिमी सभ्यता और उसका सलीका ही मानक बनते जा रहे हैं। इस लिहाज से दुनियाभर की बोलियों में भी एकरूपता कभी अनुसरण तो कभी अनायास ही होती जा रही है। चूंकि रोजी और रोजगार के लिए छोटे समुदायों की भाषाएं सहयोगी नहीं रह पायी हैं तो उनका चलन रोजाना की जिंदगी से कम होता जा रहा है और भाषाएं मर रही हैं। इसमें हर देश की अपनी केंद्रीय भाषा जहां केंद्रीय भूमिका में हैं वहीं उसके देशज रूप लगातार या तो कमजोर हुए हैं या फिर लुप्त हो

रहे हैं। कथित आधुनिक सोच इस प्रवृत्ति को और बढ़ावा दे रही है। भारत में अंग्रेजी इस आधुनिकता की वाहक है। इसी तरह कुछ प्रमुख भाषाएं अपने-अपने क्षेत्रों में आधुनिकता का केंद्रीय तत्व बन चुकी हैं। बहुत सी ऐसी भाषाएं हैं जो इतने कम लोगों द्वारा बोली जाती हैं कि निकट भविष्य में उनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा। भारत में तीन ऐसी भाषाएं हैं। जिनके अस्तित्व पर संकट आ खड़ा हुआ है। इसमें पहले स्थान पर कर्नाटक की कोरगा है। जिसे बोलने वालों की संख्या महज सोलह हजार ही है। हिमाचल प्रदेश की सिरमौरी को महज 31 हजार लोग ही बोलते हैं। इस सूची में तीसरे स्थान पर छत्तीसगढ़ की पारजी भाषा है। जिसे केवल पचास हजार लोग बोल रहे हैं। एकीकरण के दौर में रोहिंग्या लोगों की भाषा हनीफी भी मरने के कगार पर है। ऐसे ही अस्तित्व के संकट से आयरिश, सिसिली और यिडिश भाषाएं भी जूझ रही हैं। हमें याद रखना चाहिए कि भाषाओं की गहन विविधता सांस्कृतिक विविधता को न केवल सुनिश्चित करती है। बल्कि अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को आकार देती हैं। यदि आज के दौर में किसी भाषा को पीछे धकेला जा रहा है या किनारे किया जा रहा है तो इसका अर्थ यह भी है कि इसके जरिये एक तरह से उस भाषा विशेष के क्षेत्र की संस्कृति का हिस्सा भी गायब हो रहा है। हर संस्कृति में सब कुछ लिखने की क्षमता नहीं होती। उसके कई तत्व श्रुति, स्मृति और चलन के सहारे जीवित रहते हैं। भाषा के मरने के बाद संस्कृति का यह अलिखा हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी भाषाओं को जीवित रखें।

भाषाओं को जीवित रखने के लिए स्थानीय स्तर पर कोशिशें भी हो रही हैं। चीन ने अपनी पुरानी मंदारिन को संरक्षित करने के लिए अभियान चला रखा है। नाइजीरिया अपनी भाषाओं को वाचिक रूप में बचाये रखने के लिए रिकॉर्ड करने का सहारा ले रहा है। भारत में भी कई लोग अपनी बोलियों के लिए ऐसी कोशिशें कर रहे हैं। मरती हुई भाषाओं के लिए व्यक्तिगत की बजाय सामूहिक कोशिशें होनी चाहिए। 'भाषा किसी भी संस्कृति का रोडमैप होती है। वह आपको बताती है कि इसे बोलने वाले लोग कहां आते हैं और कहां जा रहे हैं।'

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता : इसके लक्षण और विकार

डॉ. झुनु मुखर्जी

बी.आर. सिंह अस्पताल, सियालदह

मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक विकार के कुछ प्रकार निम्नलिखित हैं:

तनाव और चिंता विकार: - चिंता विकारों के उदाहरण में सामान्यीकृत चिंता विकार (Generalized anxiety disorders), सामाजिक भय, विशेष भय (जैसे एगोराफोबिया और क्लौस्ट्रोफोबिया), घबराहट संबंधी विकार, ओसीडी और पीटीएसडी सभी शामिल हैं। जब इनका समय पर इलाज नहीं किया जाता है, तो चिंता विकार किसी व्यक्ति की रोजमर्रा की जिंदगी में उसके कार्य करने की क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

एंकजाइटी विकार: - अपोजिशनल डिफिएंट डिसऑर्डर (ओडीडी), कंडक्ट डिसऑर्डर (सीडी), और अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (एडीएचडी) जैसी बीमारियां बच्चों में काफी आम होती हैं। इन मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों का इलाज मनोचिकित्सा, मनोशिक्षा और/या दवाओं से किया जा सकता है।

मैनिक डिप्रेशन - मैनिक डिप्रेशन को एक अधिक सटीक शब्द बाइपोलर अफेक्टिव डिसऑर्डर से बदल दिया गया है, जो कि मूड संबंधी बीमारी का एक विशिष्ट रूप होता है। जो लोग बाइपोलर डिसऑर्डर से पीड़ित होते हैं, उनका मूड अत्यधिक मैनिया (उत्साह) और डिप्रेशन के अवधियों के बीच बदलते रहते हैं। व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक लक्षण हो सकते हैं या नहीं हो सकते हैं। हालांकि इसके सटीक कारण अब तक अस्पष्ट है, लेकिन एक मजबूत आनुवंशिक प्रवृत्ति का सबूत देखा गया है। इस मानसिक बीमारी के दौरों को पर्यावरणीय तनावों के कारण भी उत्पन्न किया जा सकता है।

अवसाद: - डिप्रेशन एक मनोदशा स्थिति होती है जिससे व्यक्ति दुखी, उत्साहहीन और किसी भी चीज का आनंद लेने में असमर्थता महसूस करता है। यह बस एक उदास मन की बात नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है। मनोदशा संबंधी विकार विभिन्न लक्षण प्रस्तुत करते हैं। डिप्रेशन हल्के से लेकर गंभीर तक हो सकता है, और इसके लक्षण समय के साथ बदल सकते हैं। डिप्रेशन के लक्षण आत्महत्या विचारों के साथ कभी-कभी उन पर कार्रवाई करने की संभावना को भी बढ़ा देते हैं।

अलगाव और अलगाव संबंधित विकार (dissociative disorders) के साथ समस्याएँ: - अलगाव एक मानसिक स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों से भावनात्मक और मानसिक रूप से अलग हो जाता है। अलगाव संबंधित विकार में भूलने की बीमारी, फ्यूग, डिपर्सनलाइजेशन और डिसोसिएटिव आइडेंटिटी जैसी व्यापक मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ शामिल होती हैं।

खानपान विकारों की समस्याएँ: - खाने से संबंधी विकार जैसे अनोरेक्सिया, ब्यूलीमिया नर्वोसा और अत्यधिक खाने के अन्य रूप केवल कुछ विकार हैं। खाने की विकारों से जुड़े मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के खतरे के लिए लड़के और लड़कियाँ दोनों ही समान रूप से संवेदनशील होते हैं।

अनुष्ठानिक व्यवहार (Ritualistic behaviours): - चिंता विकार में ऑब्सेसिव कपल्सिव डिसऑर्डर (ओसीडी) शामिल होता है। जुनून (Obsession) एक सोचने, महसूस करने या किसी कार्य करने के अवांछनीय और दोहराव वाले पैटर्न होते हैं। चिंता उत्पन्न करने वाली और समय लेने वाले

व्यवहार एक प्रकार के ऑब्सेसिव डिसऑर्डर होते हैं। उपचार के दो मुख्य तरीकों में दवा और संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी (सीबीटी) शामिल हैं।

संविभ्रम (Paranoia): - एक निरंतर और तर्कहीन डर कि दूसरे आपको नुकसान पहुंचाने की साजिश कर रहे हैं, पैरेनोया को चित्रित करता है। पैरेनोया कई मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के संकेत हो सकती है, जिसमें स्किजोफ्रेनिया, बाइपोलर बीमारी, और भ्रमात्मक (पैरेनॉयड) बीमारी शामिल हैं। पैरेनोया का इलाज करने के लिए दवा और परामर्श दोनों प्रभावी तरीके सिद्ध हुए हैं।

आतंक संबंधित तनाव विकार (Terror-Related Stress Disorder): - जिन लोगों ने अपनी जिंदगी में किसी भी प्रकार के आघात का सामना किया है, उनमें मानसिक स्वास्थ्य रोग, पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पीटीएसडी) विकसित होने का खतरा होता है। इसमें किसी भी तरह के वहाँ दुर्घटना या अन्य महत्वपूर्ण दुर्घटना से लेकर, यौन उत्पीड़न, युद्धकालीन अत्याचार, यातना या यहां तक कि बाढ़ या जंगल की आग जैसी प्राकृतिक आपदा तक कुछ भी हो सकता है।

मनोविकृति (Psychosis): - मनोविकृति से ग्रसित व्यक्ति अक्सर भ्रम, मतिभ्रम और मानसिक भ्रम के साथ संघर्ष करते हैं। नशीली दवाओं से प्रेरित साइकोसिस, सिजोफ्रेनिया और मनोदशा संबंधी विकार कुछ ऐसी मानसिक स्थितियाँ हैं जो मनोविकृति का कारण

बन सकती हैं। दवा और चिकित्सा का उपयोग करके साइकोसिस के लक्षण कम या समाप्त किए जा सकते हैं।

सिजोफ्रेनिया: - सिजोफ्रेनिया, एक गंभीर साइकोटिक स्थिति होती है, जिसमें विचार और भावना में व्यवधान के साथ-साथ यथार्थ का विकृत दृष्टिकोण होता है। सिजोफ्रेनिया के लक्षणों में एक विस्तृत विविधता मिलती है, जिसमें मतिभ्रम, भ्रम, मानसिक विकार, सामाजिक अलगाव, इच्छा की कमी और खराब विचार और याददाश्त शामिल हैं, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं हैं। सिजोफ्रेनिया से ग्रसित व्यक्तियों के लिए अपने जीवन को खतरे में डालना कोई असामान्य बात नहीं है। स्पिलिट पर्सनैलिटी सिजोफ्रेनिया को चरित्रित नहीं करता है।

निष्कर्ष

आमतौर पर, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित व्यक्ति अपनी स्थिति को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। सही देखभाल के साथ, वे क्रियात्मक जीवन जी सकते हैं। कुछ लोगों के लिए, मानसिक बीमारी के प्रभावों से निपटना एक सतत प्रक्रिया होती है। बहुत से मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित लोग यह बताते हैं कि जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती है उनके लक्षण कम हो गये हैं या पूरी तरह गायब हो गये हैं। सामान्य रूप से, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का प्रसार 18-25 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्तियों के बीच सबसे अधिक होता है और इसमें 50 वर्ष की आयु के बाद बहुत गिरावट देखी गई है।

Tele MANAS App is now available in Hindi!

Mental health support at your fingertips!

Scan here

to download the Tele MANAS app now!

Call Tele MANAS 14416

Toll Free number

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति बढ़ते जागरूकता समय रहते करें इसकी पहचान

- अचानक, अचानक, अचानक या अन्य मनोविकृति प्रभावों को पहचानना महत्वपूर्ण है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए, पेशेवरों के सहायता से चर्चा करना महत्वपूर्ण है।
- मनोविकृति, अचानक और अचानक होने वाली स्थिति है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए, पेशेवरों के सहायता से चर्चा करना महत्वपूर्ण है।

मनोविकृति

समय पर करें पहचान, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पायें निदान

अवसाद के लक्षण

- अचानक, अचानक, अचानक या अन्य मनोविकृति प्रभावों को पहचानना महत्वपूर्ण है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए, पेशेवरों के सहायता से चर्चा करना महत्वपूर्ण है।
- मनोविकृति, अचानक और अचानक होने वाली स्थिति है।
- मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए, पेशेवरों के सहायता से चर्चा करना महत्वपूर्ण है।

मनोविकृति

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : एक विराट सत्ता



कन्हैया यादव

वरिष्ठ अनुवादक, पूर्व रेलवे, सियालदह

रवीन्द्रनाथ बहुआयामी प्रतिभावान कवि, गीतकार, संगीतकार, उपन्यासकार, कथा शिल्पी, कहानीकार, नाटककार, निबंधकार, यात्रा वृत्तांत लेखक, पत्र लेखक, अनुवादक, संपादक, बाल-साहित्यकार, संस्मरणकार, आत्मचरित लेखक, चित्रकार, चिंतक, विचारक, साधक, परिकल्पक, गायक, संस्था संस्थापक और शिक्षाविद थे। यह कहना उचित प्रतीत होता है कि वे व्यक्ति न होकर युग है, उनका निर्माण युग ने किया और उन्होंने युग का निर्माण किया। वे युग द्रष्टा और युग स्रष्टा हैं। वे विश्व कवि और विराट चेतना के प्रकाश पुंज स्वयं विराट सत्ता हैं।

उनके काव्य और गद्य में अन्योनाश्रित संबंध है। ऊपर से देखने में दोनों अलग प्रतीत हो सकते हैं पर भीतर एक तार बजता है, एक लय निर्मित होती है अर्थात् इन सबके मध्य मानवता रुपी अंतर्धारा प्रवाहित होती है, जो कल्याणकारी, करुण और अविचल है। यही चिंतन इन्हे युग द्रष्टा और युग स्रष्टा बनाती है। ऐसे शताब्दी पुरुष सैकड़ों साल में कभी-कभी ही अवतरित होते हैं। बंगाल और बंगाली के लिए वे अवतार पुरुष, ठाकुर थे। वे हमारे समक्ष संस्कृति पुरुष के रूप में नजर आते हैं। उनका मानव प्रेम, देश प्रेम, विश्व प्रेम सभी एक दूसरे से संपृक्त है। प्रकृति का चारु चित्रण करने वाले मानवता के पुजारी अन्य कहीं देखने को नहीं मिलता। पृथ्वी के किसी भी कोने का व्यक्ति क्यों न हो, वे उसके आर्तनाद से द्रवित होते हैं। उनके लिए मनुष्यता से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं। यही इनकी रचना के मूल में सुनाई देता है। करुणा और प्रेम ऐसे तत्व हैं जिनके ऊपर उनकी पूरी रचना केन्द्रित है।

7 मई, 1861 को कोलकाता के जोडासाको के जमींदार परिवार में उनका जन्म हुआ। कठोर अनुशासन में उनका लालन-पालन हुआ। अत्यधिक पैतृक संस्कारों के कारण वे बचपन से संवेदनशील हो गये। उनका संसर्ग बुद्धजीवियों और कला प्रेमियों के साथ रहा। उनके घर में ही साहित्य और कला प्रेमियों का जमावड़ा था। उनके परिवार के लोग प्रतिभा संपन्न लेखक, समाजसेवी, वैज्ञानिक और संगीतज्ञ थे। इसका प्रभाव उनके उनके पूरे व्यक्तित्व पर दिखाई पड़ता है। 12 वर्ष

की अल्प आयु में उनकी कविता 'अभिलाषा' तत्वबोधिनी प्रमुख पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसी समय 1873 ई. में उन्होंने 'पृथ्वी पराजय' नाटक लिखा, जिसकी विषय-वस्तु बाहर की थी। करुणा उनके साहित्य का मूल विन्दु है जो पुरजोर तरीके से मानवता का शंखनाद करता है। उनके काव्य में प्रेम और करुणा अपनी विविध रूप में परलिखित होती है। उन्होंने 1881 ई. में 'बाल्मीकि प्रतिभा' संगीत नाटक की रचना की। वे केवल बांग्ला तक ही सीमित नहीं थे। उन्होंने भारतीय शास्त्र वेद और उपनिषदों का गहनता से अध्ययन और मनन किया था। बंगाल में बंकिम चंद्र चटोपाध्याय ने नवजागरण का जो बीजवपन किया था, उसे उन्होंने पल्लवित और पुष्पित किया। उन्होंने ऋग्वेद के दसवे मंडल के एक सौ पचीसवें सुक्ति के तीसरे, चौथे और पाँचवें मंत्रों का अनुवाद किया। आरम्भ से ही उनकी व्यपक दृष्टि थी। उनके समक्ष अनंत गगन था और थी समूची वसुधा। उन्होंने गगन और धरा को, स्वप्न-कल्पना और यथार्थ को एक दूसरे से आवद्ध कर दिया। बांग्ला के जातीय चेतना के साथ भारतीय चेतना को नवीनतम आकार प्रदान किया। उनका संपूर्ण साहित्य जातीय चेतना, राष्ट्रीय चेतना और विश्व चेतना का मानवतावादी दस्तावेज है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने बचपन से ही वेदों और उपनिषदों आदि का अध्ययन, अनुशीलन किया था। बालक रवीन्द्रनाथ ने इन ग्रंथों का केवल गहन अध्ययन ही नहीं किया बल्कि उस पर व्यपक चिंतन, मनन भी किया और उसके सार को अपनी बहुआयामी प्रतिभा से अपने साहित्य में प्रवाहित किया। उनका विश्व मानव चेतना पुंज का केन्द्र विन्दु प्राचीन भारतीय ग्रंथ है, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन उसका आशय यह नहीं कि उन्होंने उसका उलथा पेश कर दिया है। अगर ऐसी बात होती तो उनकी रचनाएं मानव जाति को अपील नहीं करती। उन्होंने ज्ञान और समन्वय से इस चेतना को विकसित किया है। बांग्ला के प्रसिद्ध बुद्धिजीवी भवतोष दत्त के अनुसार — बालक रवीन्द्रनाथ का यज्ञोपवीत या उपनयन संस्कार के दौरान — "ऊँ भूर्भुवस्व तत्सवितु वरेण्यं

भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्" मंत्र उनके कानों में बोला गया था, जिसे उन्होंने आत्मसात किया। 'भू' को आत्मसात करने के लिए कड़ी साधना की। विश्व मानव चेतना का बीज यहाँ प्रसफुटित होता है। रवीन्द्रनाथ ने कहा भी है- 'आबाल्योकाल उपनिषद् आवृत्ति कोरिते- कोरिते आमार मोन विश्वव्यापीर परिपूर्णता के अंतर्दृष्टिते मानते अभ्यास कोरेछे' अर्थात् मेरा पूरा बचपन उपनिषद् को पढ़ते-पढ़ते विश्वव्यापी परिपूर्णता को अंतर्दृष्टि से मानने के लिए अभ्यास करता रहा। भारतीय परंपराओं की विविध सोपानों ने उन्हें ध्यान और कर्म की साधना के लिए रत किया था। संसार की सर्वजन की आत्मीयता ने उन्हें अपने बाहुपाश में बांध लिया था, फिर भी उन्होंने स्वदेश की मर्यादा को कभी विस्मृत नहीं किया था। तभी तो उन्होंने कालांतर में मुक्त कंठ से गाया था- "मिले गेछे आज विश्वदेबोता, मोर सनातन स्वदेशे।" (मेरे सनातन स्वदेश में आज विश्वदेवता उपलब्ध हो गया है)

रवीन्द्रनाथ स्वयं में एक संस्कृति थे। उन्होंने ग्राम और नगर दोनों संस्कृति को आत्मसात कर उसके अंतर को बारीकी से समझा था। ग्रामीण संस्कृति का जहां कृषि संस्कृति से संबंध था, वहीं शहरी संस्कृति का औद्योगिक संस्कृति से सरोकार था। यह एक प्रकार से सांस्कृतिक, सांस्कृतिक अंतर था। ईश्वरचंद्र विद्यासागर का 'सांस्कृतिक विरासत के प्रति उत्कट अनुराग' था। 'करुणाजन्य मनुष्य' की ओर उनकी और रवीन्द्रनाथ दोनों की दृष्टि थी। यह एक प्रकार से दो विचार दृष्टियों के बीच की तलखी थी, टकराहट थी सामंती और सामंतविरोधी संस्कृतियों के बीच। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, राम मोहन राय, केशव चंद्र सेन के साथ ही रवीन्द्रनाथ ठाकुर का नाम स्मरण किया जाना चाहिए। रवीन्द्रनाथ बचपन से ही लोकसंस्कृति के साथ जुड़े रहे। उन्होंने देश को केवल मानचित्र में नहीं देखा था। उनके लिए भूगोल का नहीं, इतिहास और परम्परा का गहरा महत्व था, यह परंपरा जीवंत, स्वस्थ और विकासशील थी। वैदिक कवियों की तरह वे देश की मिट्टी, जल और नभ को हमारे शरीर का विस्तार मानते थे। रवीन्द्रनाथ के यहां जातीय एकता के स्वर प्रबलता से मुखरित होते हैं -

"बांग्लार माटी, बांग्लार जल, बांग्लार वायु, बांग्लार फल
पुण्यो होऊक, पुण्यो होऊक, पुण्यो होऊक,
हे भगवान!"

बांगालीर प्राण, बांगालीर जल, बांगालीर घोरे
जोतो भाई - बोन
एक होऊक, एक होऊक, एक होऊक,
हे भगवान!

रवीन्द्रनाथ का साहित्य भेद-विभेद को समाप्त कर एक

होने का, मनुष्य के एक होने की कामना का साहित्य है। सुनीति कुमार चट्टर्जी ने उन्हें 'विश्वमंच वाकपति' कहा है। भारतीय संस्कृति की अवधारणा में जिस 'धर्म' का स्थान है, वह 'मानव-धर्म' है - 'नाहि मानुषात् श्रेष्ठतर हि किंचित' रवीन्द्रनाथ ने न तो ब्राह्मण संस्कृति को न ही संस्कृत की संस्कृति को भारतीय संस्कृति समझा और कहा है। ईश्वर, मनुष्य और प्रकृति उनके काव्य विषय हैं। रवीन्द्र ने वैष्णव कवियों, सूफी कवियों और संत कवियों से बहुत कुछ ग्रहण किया। इन सबकी उनकी सांस्कृतिक दृष्टि के निर्माण में बहुत योगदान है। मनुष्य उनके लिए सदैव प्रमुख रहा। उसमें उन्होंने ईश्वर को खोजा उनके हृदय में मनुष्य के लिए करुणा की धारा प्रवाहित हुई है - 'एक बार फिराओ मोरे' कविता में उनकी दृष्टि असहाय, शोषित, पीड़ित दोनों पर है। वह कविता 33 वर्ष की आयु में उन्होंने लिखी थी -

"एक बार फिराओ मोरे, लये जाओ संसाररे तीरे
हे कल्पने, रंगोमयी, दुलाओ न समीरे।

समीरे तरंगे-तरंगे आर, भुलाओ ना मोहिनी मायाय
विजन विषाद घोनो अंतरे, निकुंज घृयाया
रेखो ना बसाये।"

(हे बहुरंगी कल्पने इस बार मुझे लौटाओ, अब समीर और तरंगों की झुले में मत झुलाओ। अब मोहिनी माया में मत फसाओ। अंतर की विषाद रुपी घने निकुंज छाया में अब बिठाये न रखो। संसार रुपी कर्म चक्र के तट पर ले चलो) बिना करुणा के यह संभव नहीं है।

'ई सब म्लान मुखे दिते होबे भाषा' (दुःख से आर्तनाद करते मनुष्यों को हुंकार ध्वनि प्रदान करनी ही होगी) यह अहंकार की समाप्ति के बिना संभव नहीं है।

गीताजलि (1910) के प्रकाशन के पूर्व रवीन्द्रनाथ के 24 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके थे - 'कवि-काहिनी' (1878) से खेया' (1906) तक 'गीताजलि' के बाद 'सेनजुती' (1938) तक के कविता संग्रह संख्या में 16 हैं। रवीन्द्रनाथ की विश्व-प्रसिद्धि मुख्यतः कवि रूप में ही है। उनके काव्य विकास को चार सोपानों में विभाजित किया गया है - संध्या - संगीत पर्व (संध्या संगीत से मानसी तक), सोनारतरी पर्व (सोनारतरी से शिशु तक), खेया पर्व (खेया से गीताजलि तक) और बलाका पर्व ('बलाका' से 'महुआ' तक) गीताजलि को नोबेल पुरस्कार (1913) मिलने के बाद रवीन्द्रनाथ विश्वभर में प्रसिद्ध हो गये। 13 नवम्बर, 1913 को जब नोबेल पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा हुई थी, उस समय तक रवीन्द्रनाथ की लगभग सौ रचनाएं प्रकाशित हो चुकी थी। तीन वृहत् काव्य संग्रह काव्य - ग्रंथावली (1896), काव्य - ग्रंथ (1903) एवं रवीन्द्र ग्रंथावली

(1904) प्रकाशित हो चुके थे। प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह 'चयनिका' (1909) भी प्रकाशित हो चुका था। वे पचास वर्ष के हो चुके थे। पर अपने देश में उन्हें मानसम्मान नहीं था। 28 जनवरी 1912 को कलकत्ता के टाउनहॉल में उनकी जयंती मनाई गई थी, पर एक विशिष्ट दल का विद्रोह भी दिखाई पड़ा था। नोबेल पुरस्कार के दस दिन बाद 23 नवम्बर, 1913 को शांति निकेतन में अपने सार्वजनिक अभिनंदन समारोह के अवसर पर उन्होंने कहा था – "अपने देश के हाथों जो मुझे अपमान और अपयश भोगना पड़ा, उसका परिमाण कोई कम नहीं था। अब तक उसे मैंने धर्य से सहा है। इस संदर्भ में मुझे यह बात ठीक से समझ में नहीं आती कि सम्मान मुझे बाहर से क्यों मिला। पूर्वी तट पर बैठा मैं जब ईश्वर को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित कर रहा था, तो यह नहीं जानता था कि उसे स्वीकार करने के लिए वह अपना दायों हाथ पश्चिमी तट पर फैलाएगा।"

'गीताजलि' बांग्ला में लिखित 157 गीति रचनाओं का संग्रह है, जिसके चालीस से अधिक हिंदी अनुवाद हो चुके हैं। यह सर्वप्रथम सितम्बर 1910 में इंडियन पब्लिकेशन हाउस, कोलकाता से प्रकाशित हो चुका था। अंग्रेजी गीताजलि में बांग्ला गीताजलि के 53 गीतों के अंग्रेजी अनुवाद हैं। अन्य 50 गीत दूसरे काव्य संकलनों और असंकलित गीतों से हैं। अंग्रेजी 'गीताजलि' का प्रकाशन नवम्बर 1912 में इंडिया सोसायटी, लंदन से हुआ। भूमिका येट्स ने लिखी। गीताजलि के गीतों की रचना 1908 से 1910 के बीच हुई है। अपने इन गीतों को रवीन्द्रनाथ ने 'निराभरण' कहा है- जिनमें परिधान और अलंकार का व्यर्थ अहंकार नहीं है। 'गीताजलि' के गीत एक स्वर के नहीं हैं, वहां वे अपने को भयमुक्त करने की बात कहते हैं- दाओ हे आमार भय भेंगे दाओ, अपने – पराये में कोई अंतर देखना नहीं चाहते – "आजि जेनो भेद नाहि रये/ आपना पोरे" वे अश्रुजल में समस्त अहंकार डुबो देने की प्रार्थना करते हैं – 'सकल अहंकार हे आमार/ डुबाओ चोखेर जोले'। रवीन्द्रनाथ के यहां मुक्ति प्रमुख है – 'मुक्त करो हे मुक्तो करो आमारे।' वे नारायण को नर में देखते हैं, जिन्हें हम कभी नमस्कार नहीं करते- 'शतक शताब्दी धरे नामे शिरे असम्मान – भार/मानुषेर नारायणे तबेओं कोरे ना नमस्कार आमारे'। डा. रामेश्वर मिश्र ने अपने शोध प्रबंध 'मध्ययुगीन हिंदी साहित्य और रवीन्द्रनाथ' से पहली बार सबका ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने ने यह बतलाया कि 'गीताजलि' की पाण्डुलिपि में हिंदी के दोहे उद्धृत हैं। रवीन्द्रनाथ की मध्यकालीन हिंदी कविता से घनिष्ठ संबंध था।

रवीन्द्रनाथ ने मध्यकालीन हिंदी कविता से प्रभाव ग्रहण किया और रवीन्द्रनाथ से हिंदी कविता ने विशेषतः छायावाद

ने प्रभाव ग्रहण किया। इन दोनों प्रभावों में अंतर है। हिंदुस्तानी संगीत से रवीन्द्रनाथ को प्रेम था। इस प्रेम ने उन्हें हिंदी संगीत से जोड़ा। वे हिंदी के भक्त कवियों के प्रेमी थे। कबीर के प्रति उनका गहरा आकर्षण था। वे सगुणमार्गी कवियों – सूर, तुलसी के प्रति भी आकर्षित थे। 'सूरदासेर प्रार्थना' उनकी प्रमुख कविता है और तुलसीदास पर लिखी गई कविता 'स्वामी – लाभ' है। रवीन्द्रनाथ ने नाभादास का भक्तमाल भी पढ़ा था। निर्गुण-सगुण कवियों में उन्होंने अंतर नहीं किया। बांग्ला के वैष्णव कवि सगुणमार्गी थे, कृष्णोपासक थे, जिनकी रचनाएं रवीन्द्र को प्रिय थी। विद्यापति के पदावली के तर्ज पर उन्होंने 'भानुसिंहेर पदावली' की रचना की। 1884 में 'भानुसिंह ठाकुरेर पदावली' प्रकाशित हुई थी। नोबेल पुरस्कार पाने के पहले ही हिंदी में रवीन्द्रनाथ के रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित होने लगे थे। गोपालराम गहमरी ने उनके काव्य-नाटक 'चित्रांगदा' का हिंदी अनुवाद 1895 में प्रकाशित कराया था। महाबीर प्रसाद द्विवेदी ने मार्च 1912 में सरस्वती पत्रिका में 'कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर' शीर्षक व्यक्ति चरित लिखा था। रवीन्द्रनाथ का हिंदी गीत-संगीत से परिचय बाल्य-काल से ही हो गया था। उन्होंने हिंदी गीत – संगीत के आधार पर सैकड़ों गीतों की रचना की। इन्दिरा देवी चौधरानी ने उनके गीत – संकलन 'गीत पंचशती' की भूमिका में लिखा है कि रवीन्द्र ने भारत भर में जिस कोटि का भी स्वर सुना या पाया, उसमें उपयुक्त शब्द-योजना की या उसके आधार पर गीतों की रचना की। अनेक नये तालों और मिश्र सुरों का प्रवर्तन किया। 'प्रेम' उनके गीतों का प्राण तत्व है। इससे जिस लय, संगीत की सृष्टि होती है, वह किसी एक स्थान में सीमित नहीं रह सकती है, न किसी एक युग में। 'गीताजलि' के गीतों में बंधन से मुक्त करने और सबके संग युक्त करने की प्रार्थना है – अंतरमम विकसित करो/ हे अंतरयामी। अज्ञान का अंधकार दूर करने और ज्ञान का प्रकाश भरने का वहाँ विह्वल स्वर है। उनके गीत संक्षिप्त हैं। वे अंतर्मन की पुकार हैं। अपने गीतों पर रवीन्द्रनाथ को पूर्ण विश्वास था। इसका मुख्य कारण उनके गीतों की नैसर्गिकता और सहजता है। उन्होंने अपने गीतों के बारे में जो भविष्यवाणी की थी, वह एकदम से सच हुई – 'मैं निश्चित जानता हूँ कि भविष्य में मेरे कविता, कहानी, नाटक के साथ चाहे जो बीते, मेरे गीतों को बंगाली समाज को ग्रहण करना ही होगा, मेरे गीत सबको गाने ही होंगे, बंगाल के घर-घर में, तरुहीन, सुदूर पथ पर, मैदानों में, नदी के तीर-तीर, मैंने देखा है... मेरे गीत जैसे मेरे अचेतन मन से बरबस निकले हैं, इसलिए उनमें एक संपूर्णता है।"

रवीन्द्रनाथ ने अपने गीतों को स्वयं कई शीर्षकों में विभाजित किया है – 'प्रेम', 'पूजा', 'विचित्र', 'वर्षा', (शेष पृष्ठ 38 पर)

हिन्दुस्तान की सांस्कृतिक धरोहर कोलकाता की ट्राम सेवा

राकेश कुमार
वरिष्ठ सेक्शन अधिकारी, लेखा,
पूर्व रेलवे, सियालदह



हाल ही में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा कोलकाता की ऐतिहासिक ट्राम सेवा को बंद करने (सिर्फ मैदान से एस्प्लानेड तक एक छोटी 'हेरिटेज' रूट छोड़कर) के निर्णय ने आम जनता, पर्यावरणविदों, इतिहास प्रेमियों और शहरी योजनाकारों के बीच गहरा असंतोष पैदा कर दिया है। इतनी प्राचीन विरासत को कोई सरकार कैसे बंद करने की सोच सकती है! एक आम नागरिक के लिए जब पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बढ़ावा देकर निजी वाहनों को सीमित करने की जरूरत है ताकि पर्यावरण संतुलन को कुछ हद तक ठीक किया जा सके। किसके हित को ध्यान में रख कर ये निर्णय लिया गया होगा ये भी चर्चा का विषय हैं।

इस अनोखी और पर्यावरण-अनुकूल परिवहन प्रणाली को खत्म करने के बजाय कोलकाता को इसकी अपग्रेडेशन की सख्त जरूरत है। कोलकाता भारत का एकमात्र शहर है जहाँ आज भी ट्राम चलती है। 1873 से ट्रामें इस शहर की सड़कों पर दौड़ रही हैं। पीढ़ियों से यह शांत, बिजली से चलने वाला वाहन एक सस्ता, सुरक्षित और प्रदूषण-मुक्त विकल्प रहा है। लेकिन दशकों की उपेक्षा, घटती रूट्स और आधुनिकरण के अभाव ने ट्राम को धीरे-धीरे शहर के परिवहन तंत्र के हाशिये पर ला खड़ा किया है।

क्यों आज भी जरूरी हैं ट्राम?

आज जब दुनियाभर में पर्यावरण संरक्षण और ईंधन की बढ़ती कीमतें चिंता का विषय हैं, ट्रामें एक साफ-सुथरा, कम-प्रदूषणवाला विकल्प प्रदान करती हैं। डीज़ल से चलने वाले वाहनों के विपरीत, ट्राम बिजली से चलती हैं और हवा को प्रदूषित नहीं करतीं। इनका कार्बन फुटप्रिंट बहुत कम है और यदि नवीकरणीय ऊर्जा से इन्हें संचालित किया जाए तो यह और भी हरित विकल्प बन सकती हैं।

इतिहास की दृष्टि से, कोलकाता की ट्रामें सिर्फ एक परिवहन का माध्यम नहीं बल्कि चलती-फिरती विरासत हैं। सैलानी अक्सर इन ट्रामों की सवारी करना चाहते हैं ताकि वे कोलकाता की औपनिवेशिक विरासत को महसूस कर सकें। केवल 2.5 किलोमीटर की 'हेरिटेज'



ट्राम चालू रखना, इस विरासत को कमतर आंकने जैसा है।

आधुनिकरण ही समाधान है।

भीड़भाड़ के चलते ट्रामें बंद करना एक छोटे दृष्टिकोण का परिचायक है। इसके बजाय कोलकाता को उन वैश्विक शहरों से सीखना चाहिए जिन्होंने अपने ट्राम नेटवर्क को सफलतापूर्वक आधुनिक बनाया है।

मेलबर्न, एमस्टर्डम और ज्यूरिख जैसे शहरों ने दिखाया है कि समर्पित ट्राम लेन, ट्रैफिक सिग्नल प्राथमिकता और व्यापक परिवहन नेटवर्क में एकीकरण के साथ ट्रामें तेज़, कुशल और आरामदायक हो सकती हैं। कोलकाता के पास पहले से ही आधारभूत संरचना है—अब जरूरत है राजनीतिक इच्छाशक्ति और निवेश की।

यह हैं कुछ सुझाव:

- समर्पित ट्राम कॉरिडोर बनाएं ताकि ट्रामें सामान्य यातायात में बाधा न डालें और तेज़ चल सकें।
- नए कम-फ्लोर और एसी ट्राम लाएँ जो आधुनिक हों, बुजुर्गों और विकलांगों के लिए सुलभ हों।
- स्मार्ट टिकटिंग सिस्टम के ज़रिए ट्राम को मेट्रो, बस और फेरी सेवा से जोड़ा जाए।
- पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत ट्राम सेवाओं का संचालन किया जाए—थीम ट्राम, कैफे ट्राम या विज्ञापन आधारित ट्राम इससे आय भी बढ़ सकती है।

- जन जागरूकता अभियान चलाकर ट्राम की पर्यावरणीय और सांस्कृतिक अहमियत को बताया जाए।

आर्थिक और सामाजिक लाभ

ट्रामों का उन्नयन रोज़गार के अवसर पैदा करेगा, गरीब और मध्यम वर्ग के लिए सस्ते आवागमन की सुविधा देगा, और ईंधन पर हमारी निर्भरता घटाएगा। साथ ही, यह हरित पर्यटन (eco-tourism) को भी बढ़ावा दे सकता है।

जब देश के अन्य शहर प्रदूषण और यातायात से जूझ रहे हैं, कोलकाता के पास एक हरित भविष्य की मिसाल पेश करने का सुनहरा मौका है। ट्रामें केवल पुरानी तकनीक नहीं, बल्कि भविष्य के लिए तैयार एक संसाधन हैं।

निष्कर्ष

कोलकाता की ट्राम सेवा को बंद करना सिर्फ़ एक परिवहन प्रणाली को खत्म करना नहीं है, यह शहर की आत्मा के एक हिस्से को खो देना है। इसके बजाय, हमें इसे संवर्धित और आधुनिक बनाना चाहिए। ट्रामें अब भी हमारे शहर को एक टिकाऊ, सुलभ और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध मार्ग प्रदान कर सकती हैं। सवाल यह नहीं है कि कोलकाता ट्रामें बनाए रख सकता है या नहीं—सवाल यह है कि क्या कोलकाता उन्हें खोने का जोखिम उठा सकता है?



सुख क्या है - यह जानें

शिव प्रसाद साव
कनिष्ठ अनुवादक
पूर्व रेलवे, सियालदह



सुख क्या है, इसको परिभाषित करना बड़ा कठिन है। पहले छोटी - छोटी चीजों में बड़ा सुख मिलता था, ऐसा अक्सर कहा जाता है। यह सुख का सिर्फ कोरा एहसास, आज कहा नहीं जा सकता क्योंकि आज के तनाव, अकेलेपन, व्यस्तताओं और सैकड़ों चीजों से भरे जीवन में सुख की डायर में क्या है यह पता नहीं।

सुख असल में वह है जिसे मिलने पर खुशी हो क्योंकि उस की अपेक्षा नहीं थी। सर्दियों में धूप भरा दिन सुख है तो गरमियों में पानी के छीटें सुख है, भूख में महकती करारी गरम रोटी सुख है तो कड़कती धूप में एक ग्लास शीतल जल। सुख तो तब है जब पड़ोसन बिना कारण अपने हाथ का बना हलवा दे जाए। राह चलते हुए कोई परिचित मिल जाए जो आप का रास्ता काटना आसान कर दे और रात को जीवनसाथी अचानक हाथ बढ़ा कर बाहों में ले ले, यह सुख है।

सुख तो वह है जो खरीदा नहीं गया, अपने आप मिल गया। सुख वह जो आप ने दूसरों को बिना मांगे दिया और उसका चेहरा चमक गया। सुख वह है जो आप की दिक्कत दूर करे, आपके अकेलेपन को दूर करे। रेल यात्रा के दौरान पुराना दोस्त मिल जाए यह भी एक सुख है। लेकिन यह सब सुख पाना सरल नहीं है। अपने - आप अनायास होने वाली घटना या मिलने वाली सामान के लिए भी आपको या किसी को कुछ करना होगा। बस फर्क इतना जो बिना अपेक्षा, बिना मांगे मिल या दिया जाए वह सुख है बाकी व्यापार।

आज जो तनाव बढ़ रहा है उसका कारण है कि हम उस सुख को देना, पहचानना या पाना भूल रहे हैं। हमें करेंसी नोट या क्रेडिट कार्ड पर इतना भरोसा है कि हम भूल रहे हैं कि असल सुख उनके बिना है। आपका तनाव

तब कम होता है जब आप बिना किसी कारण किसी अनजान से एअरपोर्ट की लाउंज में कॉफी शेयर करते हैं। कोई आपकी सुरुचिपूर्ण पहनावे की ऐसे ही चलते हुए भरपूर तारीफ कर देता है।

उस सुख को पाने के अवसर ढूँढ़िये। दूसरों के लिए कुछ करिए और दूसरों को अपने लिए कुछ करने दीजिए। हर संबंध में मोलभाव और नापतौल न करिए। 'मैं उसके लिए कुछ क्यों करूँ जब उसने मेरे लिए कुछ किया ही नहीं' कहना भूल जाइए, तब आप को बहुत सुख मिलने लगेगा। अनजान लोगों के ग्रुप में शामिल होईए, काम समाजसेवा का हो या राजनीति का, मोहल्ले का हो या सोसाईटी का, उनको बोझ समझे बिना उनमें शामिल होईए। सुख कहीं बिखरा मिल जाएगा।

हाँ, फूलों के साथ कांटे भी होता है। काटने वाली मधुमक्खियाँ भी होती हैं। पर उन की वजह से फूलों को नष्ट थोड़े किया जाता है। अपने दिन के और दिन के कुछ हिस्से दूसरों के लिए रखिए लेकिन धर्मबाज को सुख का रास्ता हरगिज न मानिए क्योंकि वहाँ धोखा ही मिलता है। धर्म का रास्ता दलालों का बनाया होता है जो सुख के सपने दिखा कर जाल में फंसाते हैं और सुख की जो परिभाषा बताते हैं वह उनके स्वार्थ की पूर्ति के लिए होती है आप के संतोष के लिए नहीं।

सच्ची खुशी मनुष्य की जन्मजात इच्छा है और यह हमारे समाज द्वारा बताए गए तरीके से कहीं अधिक प्राप्त करने योग्य है। सच्ची खुशी में धन, संपत्ति, सफलता, स्थिति या शक्ति जैसे बाहरी सुखों के अस्थायी परिणाम के बजाय पूर्णता, आंतरिक शांति और संतुलन की एक स्थायी भावना शामिल है। सुख दीर्घगामी स्वस्ति की अनुभूति है, मन की शांति और जीवन से संतुष्ट होने का

भाव है – हम सदैव इसी की कामना करते हैं। जब हमें इसका तनिक भी स्वादमिलता है तो हम इसे सदा के लिए चाहने लगते हैं। प्रायः हम यह सोचते हैं कि हम अच्छा भोजन खा लें, महंगे कपड़े पहन लें और हमेशा मौज करते रहें, तो हम सुखी हों जाएंगे। पर ऐसा नहीं है। हम यह भी सोचने लगते हैं कि यदि हम अपनी सभी आवश्यकताओं अकेलेपन और अवसाद की ओर ले जाता है।

कभी-कभी केवल अपने विचारों और भावनाओं के साथ अकेले रहना असुविधाजनक हो जाता है, इसलिए हम संगीत, कंप्यूटर गेमज़, खाने की चीजें, यौन-क्रिया और व्यवसायों से अपना ध्यान बंटते हैं। परन्तु वास्तव में यह सब हमें दूसरों से जोड़ता नहीं है, न ही यह सुख की सच्ची अनुभूति दे पाता है। सुखी होने के लिए और दूसरों से जुड़ने के लिए, हम अक्सर सोशल मीडिया की ओर झुकते हैं। अपनी 'सेल्फी' पर आई 'लाइक्स' अथवा किसी मित्र के सन्देश पर कुछ देर के लिए अभिराम की एक लहर सी आती है पर यह हमें और अधिक पाने की लालसा से भर देती है। हम बराबर अपना फ़ोन देखते रहते हैं, व्यग्रता से अपनी नशे की अगली खुराक की प्रतीक्षा में। परन्तु हमें चाहे कितनी ही 'लाइक्स' और सन्देश प्राप्त हो जाएँ हम लोगों से अपने को कटा हुआ ही अनुभव करते हैं।

बुद्ध ने कहा है कि सुख का सबसे बड़ा स्रोत औरों को अपने हृदय में स्थान देना है। जब हम पूरे मन से दूसरों की भलाई और सुख की परवाह करते हैं, हमारा हृदय स्नेह से भर जाता है, मुक्त रूप से औरों से जुड़ता है और हम स्वयं भी स्वस्ति का अनुभव करते हैं। हम शारीरिक रूप से भी बेहतर अनुभव करते हैं। दूसरों के सुख की चिंता करते हुए, हम यथासम्भव उनकी सहायता करना चाहते हैं तथा

ऐसा कुछ भी करने से बचते हैं जिससे उन्हें कोई नुकसान हो जाए। इससे विश्वास से भरी दोस्तियाँ बनती हैं जो हमारे जीवन को सार्थक बनाती हैं। परिवार और मित्रों का सहारा पाकर हमारे भीतर शक्ति आ जाती है जिससे हम जीवन का हर स्थिति में सामना कर सकते हैं।

इससे पहले कि हम वास्तव में दूसरों के सुख के बारे में सोचें, हमें पहले अपने से शुरुआत करनी चाहिए। यदि हम अपने लिए सुख की कामना नहीं कर पाते तो हम किसी दूसरे के सुख की कामना कैसे करेंगे ? यह सोचना आसान है कि आज की दुनिया पर कुछ भी असर डालने में हम पूरी तरह असमर्थ हैं। हम सोच सकते हैं, “जो भी हो। हमें क्या ?” परन्तु वास्तविकता यह है कि हम अनजान लोगों के कुशल-क्षेम के बारे में सोच कर और सहायता करने का प्रयास करके उनका भला कर सकते हैं। एक छोटी सी मुस्कान अथवा कहीं भी किसी भी कतार में अपने से पहले किसी को जाने देकर हमें लगता है कि हमने कुछ अन्तर तो पैदा किया। हमें आत्म-गौरव का अनुभव होता है – हम भी कुछ देने योग्य हैं, और एक बहुत अच्छी अनुभूति होती है। हमें अपना साथ और अपना जीवन अधिक सुखमय लगता है।

अतः जो चीजें हमें वास्तव में दूसरों से जोड़ती हैं, वह है उनके सुख के बारे में सोचना और यह की हम उनकी कैसे सहायता कर सकते हैं बजाय इसके कि हम अपने महत्त्व की पुष्टि करने और हमें सुखी बनाने के लिए उनका मुंह देखें। बात वहीं आ जाती है, आत्म-तल्लीनता बनाम लोगों के कुशल-क्षेम की पूरे मन से परवाह करना। हम मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। हम दूसरों से जुड़कर ही फल-फूल सकते हैं। अतः दयालुता, दूसरों के लिए सरोकार और करुणा, यही मुख्य बातें हैं जो हमें सुखी जीवन जीने के लिए पोषित करनी हैं।

“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।”

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

सुनीता विलियम्स : अंतरिक्ष में साहस की प्रतीक महिला

आत्रेयी मल्लिक

वरिष्ठ आशुलिपिक, पर्यावरण एवं गृह व्यवस्था प्रबंधन कार्यालय, पूर्व रेलवे, सियालदह

सुनीता विलियम्स का नाम अंतरिक्ष के इतिहास में एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में दर्ज है। एक महिला के तौर पर, उन्होंने अपनी यात्रा में न केवल शारीरिक और मानसिक बाधाओं का सामना किया, बल्कि उन्होंने समाज और विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए, जो महिलाओं की भूमिका को वैज्ञानिक क्षेत्रों में नए आयामों तक ले जाते हैं। सुनीता विलियम्स 286 दिनों तक अंतरिक्ष में फंसी रहीं, जो कि नौ महीने से ज्यादा है। उनका मूल मिशन सिर्फ एक हफ्ते के लिए तय किया गया था, लेकिन स्टारलाइनर अंतरिक्ष यान में तकनीकी समस्याओं के कारण उनकी वापसी में देरी हुई। सुनीता विलियम्स की कहानी यह साबित करती है कि कोई भी चुनौती, चाहे वह अंतरिक्ष की गहरी खामोशी हो या किसी महिला का अपने सपनों को पूरा करने के लिए सामना करना, असंभव नहीं है।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

सुनीता विलियम्स का जन्म 19 सितंबर 1965 को ओहायो, अमेरिका में हुआ था। उनके पिता, डॉ. दीपक पांड्या, भारतीय मूल के थे, और उनकी माँ बोस्नियाई थीं। सुनीता का पालन-पोषण एक ऐसे परिवार में हुआ था, जो विविधता को सम्मान देता था। बचपन से ही उन्हें विज्ञान और अंतरिक्ष के प्रति गहरी रुचि थी, और यह रुचि बढ़ते हुए उनकी जीवन यात्रा का हिस्सा बन गई।

सुनीता ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा ओहायो से प्राप्त की और फिर वर्जीनिया के यूएस नेवल एकेडमी से इंजीनियरिंग में डिग्री हासिल की। वे एक मेहनती छात्रा थीं और उनका ध्यान हमेशा नए प्रयोगों और वैज्ञानिक कार्यों में रहता था। उनके जीवन की राह आसान नहीं थी, खासतौर पर उस समय जब विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों

में महिलाओं की संख्या बहुत कम थी। इसके बावजूद, उन्होंने कभी हार नहीं मानी और हमेशा खुद को साबित करने की राह पर चलती रहीं।

अमेरिकी नौसेना में करियर

सुनीता विलियम्स ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अमेरिकी नौसेना में शामिल होने का फैसला किया। इस दौरान उन्होंने हेलीकॉप्टर पायलट के तौर पर काम किया, और यहां से उनका साहसिक करियर शुरू हुआ। अमेरिकी नौसेना में अपनी सेवा के दौरान, सुनीता ने अपनी क्षमताओं को हर किसी के सामने साबित किया और उनके साहस और शारीरिक क्षमता ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वे अंतरिक्ष तक यात्रा कर सकती हैं। उस समय, महिलाओं के लिए विमानन और अंतरिक्ष क्षेत्र



में कदम रखना एक चुनौतीपूर्ण और असामान्य कार्य था, लेकिन सुनीता ने इस चुनौती को स्वीकार किया।

नासा के अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम में चयन:-

1998 में, सुनीता विलियम्स ने नासा के अंतरिक्ष यात्री कार्यक्रम में शामिल होने का आवेदन किया और चयनित हो गई। यह एक ऐतिहासिक अवसर था, क्योंकि उस समय तक अंतरिक्ष में महिलाओं की संख्या बहुत कम थी। नासा के कार्यक्रम में उनका चयन केवल उनके शारीरिक कौशल के लिए नहीं, बल्कि उनके मानसिक साहस और एक महिला के रूप में इस कठिन क्षेत्र में आने के लिए भी था।

नासा के अंतरिक्ष यात्री के रूप में प्रशिक्षण कठिन और अत्यधिक चुनौतीपूर्ण था। सुनीता को शारीरिक क्षमता बढ़ाने के साथ-साथ मानसिक और तकनीकी कौशल भी विकसित करने थे। उन्हें न केवल अंतरिक्ष यात्रा के लिए शारीरिक रूप से तैयार होना था, बल्कि उन्हें कई प्रकार के विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, और गणित (STEM) विषयों में भी दक्षता हासिल करनी थी। इसके अलावा, महिला के तौर पर उन्हें कई बार यह साबित करना पड़ा कि वे इस पुरुष प्रधान क्षेत्र में भी उतनी ही सक्षम हैं जितना कोई पुरुष।

अंतरिक्ष यात्रा और महिलाओं के लिए संघर्ष:-

सुनीता का पहला अंतरिक्ष मिशन 2006 में हुआ था, जब उन्हें अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर मिशन के लिए भेजा गया। इस यात्रा में उन्होंने 195 दिन से अधिक समय तक अंतरिक्ष में बिताया। यह समय सुनीता के लिए मानसिक और शारीरिक दोनों ही दृष्टिकोण से अत्यधिक चुनौतीपूर्ण था। अंतरिक्ष में रहना, जहाँ जीवन के सामान्य तरीकों से बिल्कुल विपरीत परिस्थितियाँ होती हैं, ने सुनीता को एक नई परीक्षा में डाल दिया।

एक महिला के रूप में, सुनीता के लिए यह यात्रा और भी चुनौतीपूर्ण थी। अंतरिक्ष में महिलाओं के लिए विशेष शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे कि हार्मोनल परिवर्तन, मासिक धर्म, और शारीरिक स्वास्थ्य में बदलाव। इसके अलावा, मानसिक तनाव और

अकेलापन भी एक बड़ा मुद्दा था। लंबे समय तक अकेले रहने से मानसिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। महिला के तौर पर सुनीता को उन सभी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, जिन्हें पुरुषों के मुकाबले एक महिला के रूप में अधिक चुनौतीपूर्ण माना जाता था।

इस दौरान, उन्होंने अपनी मानसिक दृढ़ता और सहनशीलता का परिचय दिया। सुनीता ने अपने कार्यों के दौरान यह साबित कर दिया कि अंतरिक्ष में भी एक महिला उतनी ही सक्षम हो सकती है जितना कोई पुरुष। उनका यह संघर्ष इस बात का प्रमाण था कि महिला होने के बावजूद, किसी भी कार्य में उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है।

वैज्ञानिक योगदान और अनुसंधान:-

सुनीता विलियम्स की अंतरिक्ष यात्रा केवल व्यक्तिगत साहस का प्रमाण नहीं था, बल्कि यह विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान का भी कारण बना। उन्होंने अंतरिक्ष में रहते हुए कई वैज्ञानिक प्रयोग किए और उन पर महत्वपूर्ण अनुसंधान किया। उन्होंने गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव, शरीर पर इसके प्रभाव, और जीवन के अन्य पहलुओं पर अध्ययन किया। उनके शोधों ने यह स्पष्ट किया कि अंतरिक्ष में रहना मानव शरीर के लिए बहुत अधिक चुनौतीपूर्ण होता है, और इसके कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान खोजना जरूरी है।

उनके द्वारा किए गए शोध और प्रयोगों ने न केवल अंतरिक्ष के जीवन को बेहतर बनाने में मदद की, बल्कि भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों के लिए भी नई दिशाएँ खोलीं।

मानसिक और शारीरिक संघर्ष:-

सुनीता विलियम्स के लिए, अंतरिक्ष में रहना सिर्फ शारीरिक रूप से कठिन नहीं था, बल्कि यह मानसिक रूप से भी बहुत चुनौतीपूर्ण था। लंबे समय तक पृथ्वी से दूर रहना और कठिन कार्यों को लगातार करना मानसिक रूप से थकाने वाला था। इसके बावजूद, सुनीता ने अपनी मानसिक शक्ति से यह साबित किया कि महिलाएँ किसी भी पुरुष से कम नहीं हैं। उनका यह संघर्ष न केवल उनके व्यक्तिगत साहस का प्रतीक था, बल्कि महिलाओं के

(शेष पृष्ठ 27 पर)

तनावमुक्ति के सूत्र



शशि भूषण गुप्ता
राजभाषा विभाग/ सियालदह

आप सभी जानते हैं कि आज तनाव हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। तनाव के सकारात्मक व नकारात्मक स्वरूप से भी हम परिचित हैं, जैसे - तनाव जब तक हमारी कार्यकुशलता को बढ़ाने में सहायक है, हमारे विकास में सहायक है, तब तक यह हमारे लिए सकारात्मक है और जब तनाव के कारण हमारा जीवन बुरी तरह से प्रभावित होने लगता है तो यही तनाव हमारे लिए नकारात्मक बन जाता है।

व्यक्ति को सफलता मिलने से पूर्व भी तनाव होता है, लेकिन यह सकारात्मक होता है और असफल होने का भी उसे तनाव होता है, जो कि नकारात्मक होता है। तनाव चाहे सकारात्मक रूप में हो या नकारात्मक स्वरूप में, हम उसके प्रति क्या प्रतिक्रिया करते हैं- यह महत्वपूर्ण होता है और इसी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप तनाव का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

मनोचिकित्सकों का कहना है- तनाव को जीने वाले अधिकतर लोग डॉक्टरों के पास तभी जाते हैं, जब उन्हें यह लगता है कि तनाव के कारण उनके हालात अब पूरी तरह से बिगड़ गए हैं। जिस तरह से कोई भी व्यक्ति अपनी कार के ब्रेक के टूट जाने पर ही उसे नहीं सुधरवाता, बल्कि बीच-बीच में कुछ भी खामियाँ होने पर उसे सुधरवाता रहता है, इसी तरह से व्यक्ति को भी अपना मानसिक स्वास्थ्य पूरी तरह से खराब होने की स्थिति का इंतजार नहीं करना चाहिए, बल्कि किसी भी तरह का तनाव यदि मन में है, तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए या मनोचिकित्सकों से परामर्श लेना चाहिए।

मनोचिकित्सकों के अनुसार-तनाव आमतौर पर लक्षणों से ही जाहिर होता है, जैसे- अपने कार्यों की गतिविधियों में अरुचि दिखना, कार्य के दौरान जल्दी थक जाना, एकाग्रता की कमी होना, भूख में अनियमितता

होना, अनिद्रा व चिड़चिड़ापन होना आदि। लेकिन तनाव का कोई शारीरिक आधार नहीं होता, जैसे- तनाव होने पर सिरदर्द या दूसरी तरह का मानसिक पीड़ा हो, यह जरूरी नहीं होता। लेकिन एक सीमा से अधिक तनाव होने पर यह शरीर के कई दूसरे हिस्सों को प्रभावित करता है, जैसे यह रक्त का दबाव बढ़ा सकता है, जिसके कारण हृदय रोग व स्ट्रोक (मानसिक आघात) का खतरा बढ़ जाता है। यह पेट में अम्ल के स्राव को भी बढ़ा सकता है, जिसके कारण अल्सरेटिव कॉलाइटिस और इरिटेबल बोवेल सिंड्रोम जैसे रोग हो सकते हैं।

तनाव हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को भी नुकसान पहुँचा सकता है, जिस कारण संक्रामक रोगों की गिरफ्त में आने का खतरा बढ़ जाता है। यह अस्थमा जैसे एलर्जीजन्य रोगों को भी बढ़ा सकता है और हमें चिंता व अवसाद के लंबे दौर में भी डाल सकता है, जिससे बचने के लिए अधिकांश लोग नशे की ओर बढ़ते हैं। जो लोग अपने तनाव का सामना नहीं कर पाते, वे आत्महत्या भी कर लेते हैं। जबकि जो धैर्य के साथ सभी मुश्किलों का सामना करते हुए तनाव से रूबरू होते हैं, वे जीवन में निरंतर आगे बढ़ते रहते हैं। इसलिए यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि जीवन के रास्ते में से गुजरते हुए तनाव किसी भी रूप में आ सकता है, लेकिन उस तनाव का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा यानी वह हमारे जीवन को सँवरेगा या उसे समाप्त करेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उस तनाव का क्या समाधान निकालते हैं।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह बताता है कि यदि समस्या सुलझाने के हमारे व्यवहार पर हम ध्यान दें और उसे सुधारें तो देश की बड़ी आबादी बिना किसी चिकित्सकीय परामर्श के ही अपने तनाव का सामना कर

सकती है। अपने व्यवहार को कैसे समझा जाए और तनाव से कैसे मुकाबला किया जाए-यह जानना सभी के लिए बहुत जरूरी है। अनेक लोगों की जिंदगी में तनाव इसलिए आता है; क्योंकि वे एक पूर्वाग्रह के नजरिये से दुनिया को देखते हैं कि दुनिया ऐसी ही होनी चाहिए और जब उनका वह नजरिया गलत सिद्ध होता है, तो वह उसे मानने के लिए, स्वीकारने के लिए तैयार नहीं होते। यदि वर्तमान परिस्थितियों की वास्तविकता को स्वीकारते हुए कार्य किया जाए तो यह निश्चित है कि हमारा तनाव कम होता है।

तनाव का भली प्रकार सामना करने के लिए हमें अपने शरीर व मन को शांत रखने वाले उपायों को अपनाना चाहिए, जैसे- योग, प्राणायाम व ध्यान का अभ्यास करना, घूमना, संगीत सुनना या रुचिकर कार्य करना इत्यादि। इन्हें नियमित करने से मन तनावमुक्त होता है और इससे व्यक्ति फिर किसी भी तरह का कार्य करने के लिए सशक्त हो जाता है, कार्य करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जाना है और तनाव का भली प्रकार सामना करते हुए उसे दूर करता है। प्राणायाम व ध्यान के अभ्यास से श्वास की गति नियंत्रित होती है, इस प्रक्रिया

के दौरान मन कुछ समय के लिए ही सही, तनाव के बोझ से मुक्त होता है और अपनी समस्याओं के समाधान भी खोजता है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार- पारस्परिक संबंधों में तनाव से बचने के लिए यदि सामने वाले की बात सुनना पसंद करें, तो रिश्तों से संबंधित तनाव कम होते हैं। इसके अलावा यदि व्यक्ति अंतर्मुखी प्रकृति का भी है, तो भी उसे ऐसे भरोसेमंद व्यक्ति की खोज करनी चाहिए, जिस पर वह विश्वास कर सके और उससे खुलकर अपने मन की बात कह सके, जिसके कारण वह परेशान है। क्योंकि जिस तरह आर्थिक आजादी पारिवारिक अर्थसंबंधी तनाव से छुटकारा दिलाती है, उसी तरह मददगार दोस्त व आत्मीय परिजन व्यक्ति का तनाव कम करने में बहुत सहायक होते हैं।

अतः तनाव को नजरअंदाज करने या यह सोचने भर से कि यह तनाव दूर हो जाएगा, इससे बेहतर यही है कि यह पता लगाया जाए कि तनाव की असली वजह क्या है, और फिर उसे दूर करने या कम करने का उपाय किया जाए। तनावमुक्ति का यही सही समाधान है।

सुनीता विलियम्स : अंतरिक्ष में साहस की प्रतीक महिला (पृष्ठ 25 का शेषांश)

लिए एक मार्गदर्शन भी था कि वे किसी भी कठिनाई का सामना कर सकती हैं।

अंतरिक्ष यात्रा में महिलाओं के योगदान की आवश्यकता

सुनीता विलियम्स की यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि महिलाओं को अंतरिक्ष मिशनों और वैज्ञानिक अनुसंधान में समान रूप से भागीदार बनाने की आवश्यकता है। उनके योगदान से यह संदेश गया कि महिलाएं किसी भी शारीरिक, मानसिक या सामाजिक बाधा को पार कर सकती हैं, अगर उन्हें सही अवसर मिले। अंतरिक्ष में महिलाओं की उपस्थिति का महत्व केवल विज्ञान के क्षेत्र में नहीं, बल्कि समाज में भी यह साबित करता है कि महिलाओं का योगदान हर क्षेत्र में अनिवार्य है।

निष्कर्ष:-

सुनीता विलियम्स की यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं होतीं। उन्होंने अंतरिक्ष में रहकर यह दिखा दिया कि कोई भी व्यक्ति, चाहे वह महिला हो या पुरुष, अगर वह अपने सपनों को पाने के लिए पूरी मेहनत और समर्पण से काम करता है, तो वह किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है। उनकी यात्रा न केवल विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण थी, बल्कि यह महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। सुनीता विलियम्स का जीवन एक आदर्श है, जो हर महिला को यह सिखाता है कि वह अपनी इच्छाशक्ति और साहस से किसी भी मुश्किल को पार कर सकती है और अपने सपनों को हकीकत में बदल सकती है।

घृणित सोच का परिणाम पहलगाम नरसंहार

रवि प्रताप सिंह
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
पूर्व रेलवे, सियालदह



22 अप्रैल 2025 को भारत के स्वर्ग कश्मीर स्थित पहलगाम घाटी में जो और जैसा नरसंहार हुआ, उससे देश के कुछ विश्वासघातियों को छोड़कर पूरा देश स्तब्ध है। क्या इससे पहले कभी किसी ने सोचा होगा कि उसके धर्म विशेष में जन्म लेने मात्र से ही उसके माथे पर मौत की लकीर खींच दी गई है। व्यक्ति जब जन्म लेता है तो उसे नहीं पता होता कि वह किस धर्मावलंबी के घर जन्मा है। शिशु जब होश संभालता है तब उसे नहीं ज्ञात होता है कि, वह हिंदू है, मुसलमान है, ईसाई है या जैन, बौद्ध, पारसी या फिर यहूदी है अथवा अन्य किसी धर्म का है। व्यक्ति चाह कर मनमाफिक धर्म में जन्म नहीं ले सकता, हाँ जन्म लेने के बाद वह धर्म परिवर्तन कर सकता है। लेकिन किसी धर्म में होने मात्र से ही किसी के जीने का अधिकार छीन लिया जाए यह कैसा चिंतन है? यह कैसी सोच है? यह कैसी विचारधारा है? यह कैसा जिहाद है? वह तो धन्य है भारत देश की वीर धरा, जिसका नेतृत्व जो भारत का शीश कभी झुकने नहीं देता और भारत के सैनिकों की वीरता जो भारतीयों को गौरव के क्षण प्रदान करती है। 22 अप्रैल की दुर्दांत घृणित घटना का 22 मिनट में बदला ले लेना किसी भी देश की सरकार के लिए आत्म संतोष की बात हो सकती है। हमारी 26 निर्दोष जानें तो वापस नहीं आ सकतीं किंतु एक पतले मरहम की परत घाव पर जरूर लग गई है, अब घाव नासूर नहीं बनेगा किसी तरह से यह मरहम उस घाव को भर देगा। ऑपरेशन सिंदूर के प्रति समर्थन व्यक्त करने के लिए, देश की विपक्षी दलों के प्रतिनिधि भी देश की तरफ से विदेशों में भारत का पक्ष रखने गए, जो इस भाव का द्योतक

है कि जब बात देश की अस्मिता की आती है तो, सारा भारत एक स्वर में बोलता है। सरकार के धुर विरोधियों ने भी विदेशों में भारत सरकार द्वारा की गई सैन्य करवाई के पक्ष में अपनी बात रखी। हलांकि ऑपरेशन सिंदूर को बीच में ही युद्ध विराम द्वारा रोक देने के निर्णय की देश में तीखी आलोचना हुई, किन्तु सरकार ने स्पष्ट किया है कि युद्ध विराम का तात्पर्य पूर्णतः युद्ध विराम नहीं है, जब भी नापाक पाक ने आतंकवाद का फन उठाया तो उसे सख्ती से कुचल दिया जायेगा, तथापि जो लोगवृंद आर-पार की लड़ाई के मूड में आ चुके थे, वो एक बार हमेशा के लिए आतंकवाद से छुटकारा पाने के लिए युद्ध विराम कर देने को अनावश्यक मानते हैं, वहीं दूसरे पक्ष का चिंतन पूर्ण युद्ध की विभीषिका से देश को बचाने के सरकार के निर्णय से सहमत दिखता है। सहमति और असहमति की मान्यता को सम्मान देना ही भारतीय लोकतंत्र की सुंदरता का परिलक्षण है।



सियालदह मंडल में वातानुकूलित लोकल ट्रेन का परिचालन

आनंद मोहन
वरिष्ठ लिपिक
अधीनस्थ-वरि. मंडल सामग्री प्रबंधक
पूर्व रेलवे, सियालदह



भारतीय रेल ने पश्चिम बंगाल की बहुप्रतीक्षित वातानुकूलित ई.एम.यू लोकल ट्रेन की सौगात प्रदान की है जो कि पूर्व रेलवे के सियालदह मंडल के अंतर्गत परिचालित होने लगी है। इससे पूर्व ऐसी वातानुकूलित ट्रेनें मुंबई रेल खंड में प्रारंभ हो चुकी है किंतु पूर्वी भारत में इसका परिचालन पहली बार शुरू हुआ है। यह स्वदेशी निर्मित है और इसका निर्माण सवारी डिब्बा कारखाना, चेन्नई में संपन्न हुआ है। इसके पश्चात भारतीय रेल ने कोलकाता मेट्रो का भी व्यापक विस्तार किया है, जिसे हमारे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक-22/08/2025 को उद्घाटन किया गया। अब राजधानी में कुल मेट्रो स्टेशनों की संख्या एवं इसकी कुल लंबाई में काफी अधिक वृद्धि हुई है। इस विस्तार का सबसे अधिक लाभ हावड़ा-सियालदह मेट्रो संपर्क लाइन को हुआ है क्योंकि अब राजधानी की सड़कों से आवागमन का बोझ कम होगा एवं प्रदूषण में भी भारी कमी आएगी।

पूर्व रेलवे सदैव ऐसे कार्यों को करने में अग्रणी रहा है चाहे वह भारत की पहली मेट्रो रेल सेवा हो या फिर हुगली नदी के नीचे भूमिगत मेट्रो। आज के समय में वातानुकूलित ट्रेनों का होना कोई नई बात नहीं है क्योंकि राजधानी, दुरंतो, वंदे भारत, नमो भारत, इत्यादि भी वातानुकूलित श्रेणी की ट्रेनें हैं परंतु इनका परिचालन लंबी दूरी के लिए होता है और यह एक राज्य से दूसरे राज्य के मध्य चलती हैं।

मेट्रो रेल का विस्तार संकुचित क्षेत्र तक है और यह सिर्फ कोलकाता जैसे बड़े शहर तक सीमित है। इसलिए ई.एम.यू लोकल ट्रेन ज्यादा उपयोगी है क्योंकि इसका पूर्व से एक विस्तृत रेल मार्ग है, और यह कोलकाता के आस-पास के छोटे शहरों को भी जोड़ता है।

इस बहुप्रतीक्षित वातानुकूलित ट्रेन को दिनांक 10/08/25 को हरी झंडी के साथ उद्घाटित किया गया। उद्घाटन के समय यह ट्रेन स्टेशनों पर मौजूद यात्रियों के बीच एक आकर्षण का केंद्र थी। सभी लोग इसकी तस्वीर

ले रहे थे और कुछ युवक एवं युवतियां इसे सोशल मीडिया पर साझा भी कर रहे थे। देश एवं राज्य के अखबारों के पन्नों में भी इसे एक प्रमुख विषय का दर्जा दिया गया था। सभी यात्रियों के चेहरे खुशी से खिलखिला रहे थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानो वह मन ही मन भारतीय रेल को धन्यवाद ज्ञापित कर रहे हों। उद्घाटन के अगले दिन से ही यह ट्रेन नियमित व्यावसायिक रूप से दौड़ने लगी। यह ट्रेन संख्या 31638 डॉउन रोजाना सुबह 8:29 को राणाघाट से रवाना हो रही है और 10:10 से सियालदह में पहुंच रही है, वहीं यह ट्रेन संध्या काल में 6:50 को सियालदह से वापस रानाघाट के लिए लौट रही है। इसके मार्ग और समय सारणी को काफी सोच समझकर तय किया गया है, क्योंकि यह सबसे व्यस्ततम मार्ग है। इस तरह की वातानुकूलित ट्रेनों का परिचालन इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि कोलकाता एक गर्म और आद्रता वाली ग्रीष्मकालीन ऋतु क्षेत्र में आता है, जो कि कर्करेखा के समीप है और यहाँ की ट्रेनों में बहुत भीड़ होती है, जिससे कई यात्री बेहोश भी हो जाते हैं और निर्जलीकरण की चपेट में आते हैं। यात्रियों को और बेहतर तथा आरामदेह सेवा देने को ध्यान में रखते हुए इस वातानुकूलित ट्रेन की शुरुआत की गई है। इस ट्रेन में कुछ अतिरिक्त और भी अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं जैसे स्वचालित खुलने एवं बंद होने वाले दरवाजे, सीसीटीवी कैमरा, अत्यधिक बड़े कांच की खिड़कियां, उच्च गति एवं स्वच्छ वातावरण। स्वचालित खुलने एवं बंद होने वाले दरवाजे सुरक्षा के दृष्टि से उपयुक्त हैं, क्योंकि यह केवल स्टेशनों पर ही खुलेंगे और बंद होंगे और वह भी सिर्फ प्लेटफार्म की दिशा की ओर, जैसा कि मेट्रो ट्रेनों में होता है। पहले की तरह अब लोग चलती ट्रेनों में चढ़ना या उतरना नहीं कर सकेंगे और चोरी जैसी घटनाओं पर भी अंकुश लगेगा। अभी तो यह केवल एक ट्रेन की शुरुआत हुई है, लेकिन धीरे-धीरे भविष्य में अन्य मार्गों पर भी इसका परिचालन शुरू होने का अनुमान है।

मजदूर दिवस का इतिहास और प्रासंगिकता

अभिषेक कुमार प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक



हर कोई यहाँ मजदूर है, चाहे पहने सूट बूट या मैला।
मेहनत करके कमाता है, कोई सैकड़ा कोई देहला।

मजदूर दिवस, जिसे श्रमिक दिवस या मई दिवस के रूप में भी जाना जाता है, प्रत्येक वर्ष 01 मई को मनाया जाता है। यह दिन मजदूरों और श्रमिक वर्गों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस है, जो उनकी कड़ी मेहनत और प्रयासों को पहचानने के लिए समर्पित है। इस दिन का इतिहास और उत्पत्ति अलग-अलग देशों में अलग-अलग है, लेकिन इसके पीछे मुख्य कारण समान है – श्रमिक/मजदूर वर्ग के साथ अनुचित व्यवहार।

मजदूर का मतलब हमेशा गरीब से नहीं होता है, मजदूर वह कड़ी है जो हर सफलता का अभिन्न अंग है, फिर चाहे वो मिट्टी में सना इन्सान हो या ऑफिस की फाइल्स के बोझ तले दबा एक कर्मचारी हर वो इन्सान जो किसी संस्था के लिए काम करता है और बदले में पैसे लेता है, वो मजदूर है।

पहले के समय में, मजदूरों की हालत बहुत खराब थी। उन्हें प्रतिदिन 15 घंटे तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। उन्हें शारीरिक रूप से प्रताड़ना का सामना करना पड़ता था और अपने कार्यस्थल पर अन्य अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। मजदूरों के पास न तो कोई अधिकार थे और न ही उन्हें छुट्टी मिलती थी। ऐसा समझ लीजिए कि उनकी स्थिति बेहद दयनीय थी। उनके द्वारा कड़ी मेहनत के

बावजूद, इन लोगों को अल्प वेतन दिया जाता था और लंबे समय तक काम करने के कारण स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था।

इन समस्याओं के समाधान के लिए श्रमिक संघों ने आवाज उठाई और अपने अधिकारों के लिए मजदूर कारखाने छोड़कर सड़कों पर उतर आए। 01 मई 1886 को अमेरिका के शिकागो शहर में हजारों मजदूरों ने 8 घंटे के कार्य घण्टे की मांग को लेकर एक बड़ा प्रदर्शन किया। यह आंदोलन शांतिपूर्ण था, लेकिन मजदूरों के इस आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस ने गोलियाँ चलाई जिसमें कई मजदूरों की दुर्भाग्यपूर्ण मौत हो गई और कई घायल भी हुए।

इस घटना ने पूरी दुनिया के मजदूरों को झकझोर दिया और इस आक्रोश की लहर को समस्त विश्व के नागरिकों का समर्थन मिला। इसी को आधार बनाकर 1889 में पेरिस में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन का आयोजन हुआ और यह फैसला लिया गया कि प्रत्येक वर्ष 01 मई को 'अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस' के रूप में मनाया



जाएगा, ताकि मजदूरों के संघर्ष और बलिदान को याद किया जा सके। इसके परिणामस्वरूप, मजदूरों और श्रमिक वर्गों के लिए 8 घंटे का कार्यकाल निर्धारित किया गया।

भारत में मजदूर दिवस 01 मई को मनाया जाता है। इस दिन भारत में सार्वजनिक अवकाश होता है और श्रम दिवस समारोह, प्रदर्शन आदि देश के कई हिस्सों में आयोजित किए जाते हैं। भारत में पहला श्रम दिवस समारोह 01 मई 1923 को मद्रास (चेन्नई) में आयोजित किया गया था।

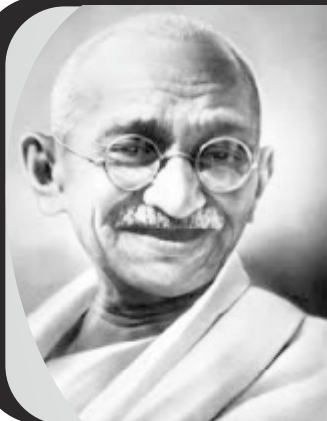
मजदूर दिवस की प्रासंगिकता

मजदूर दिवस की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी कि पहले थी। मजदूर और श्रमिक वर्ग के लोग देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। उन्हें उनके अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए एकजुट होना आवश्यक है। मजदूर दिवस हमें श्रमिकों के योगदान को पहचानने और उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है। कुछ बात हम सभी को सुनिश्चित करना आवश्यक है :-

कार्य समय:	मजदूरों के लिए 8 घंटे की कार्यकाल निर्धारित किया जाए।
वेतन:	मजदूरों को उनके काम के अनुसार वेतन दिया जाना चाहिए।
कार्यस्थल पर सुरक्षा:	मजदूरों को कार्यस्थल पर सुरक्षा प्रदान किया जाना चाहिए।
श्रमिक संघ:	मजदूरों को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए श्रमिक संघ बनाने का अधिकार है।

मजदूर दिवस को केवल अवकाश दिवस नहीं मानना है, बल्कि यह मजदूरों के योगदान और उनके सम्मान का दिन है। आज भी दुनिया भर में मजदूरों को उनके हक की मजदूरी, सेफ वर्क एनवायरनमेंट और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इस दिन को मनाकर हम उनके संघर्ष को याद करते हैं और उनके अधिकारों के लिए आम जनता और मजदूरों में जागरूकता फैलाते हैं।

मैं मजदूर हूँ, मजबूर नहीं। यह कहने में मुझे शर्म नहीं।
अपने पसीने की खाता हूँ, मैं मिट्टी को सोना बनाता हूँ।



“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।”

- महात्मा गांधी



भारत के स्वतंत्रता संग्राम में वीरतापूर्वक लड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानी

साहेब सिंह

वरिष्ठ अनुभाग अभियंता विद्युत (सामान्य)
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय सियालदह, पूर्व रेलवे



अंग्रेजों के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पूरे देश के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, असम से गुजरात तक, हज़ारों पुरुषों और महिलाओं ने ब्रिटिश राज के अत्याचारों के खिलाफ एकजुट होकर लड़ाई लड़ी। जहाँ कई लोगों ने अपनी मातृभूमि की गरिमा की रक्षा के लिए निस्वार्थ भाव से अपने प्राणों की आहुति दी, वहीं कई घायल हुए और कारावास की सजा का सामना किया। आइए, औपनिवेशिक भारत के विभिन्न हिस्सों के कुछ वीर स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानें जिन्होंने अपनी प्यारी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी: सूर्य सेन (1894 -1934) 'मास्टर दा' के नाम से प्रसिद्ध, सूर्य सेन ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी क्रांतिकारी थे। वे असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थे। वे 1930 के चटगाँव शस्त्रागार छापे में अपनी अग्रणी भूमिका के लिए प्रसिद्ध हैं, जहाँ उन्होंने क्रांतिकारियों के एक समूह का नेतृत्व करते हुए पुलिस शस्त्रागार पर छापा मारा था। अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के उनके प्रयासों के कारण उन्हें 12 जनवरी, 1934 को फाँसी दे दी गई थी। मातंगिनी हाजरा (1869-1942) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक क्रांतिकारी थीं जिन्होंने गांधीवादी सिद्धांतों को कायम रखने के लिए संघर्ष किया। भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल, उन्होंने 29 सितंबर, 1942 को पश्चिम बंगाल के तामलुक पुलिस स्टेशन पर कब्जा करने के लिए क्रांतिकारियों के एक जुलूस का नेतृत्व किया। पुलिस ने भीड़ पर गोलियाँ चलाई, जिससे 73 वर्षीय बहादुर महिला गंभीर रूप से घायल हो गई।

बाघा जतिन (1879-1915) जतिंद्रनाथ मुखर्जी, जिन्हें बाघा जतिन के नाम से भी जाना जाता है, ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी मातृभूमि को ब्रिटिश शासन के चंगुल से बचाने के स्वप्न के साथ, इस क्रांतिकारी ने बंगाल में युगांतर पार्टी का नेतृत्व किया। 10 सितंबर, 1915 को ब्रिटिश पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में गंभीर रूप से घायल होने के बाद उनका निधन हो गया। स्वामी विवेकानंद के आदर्शों से प्रेरित होकर, बाघा जतिन द्वारा दिए गए साहसिक कथनों में से एक था: 'हम राष्ट्र को जगाने के लिए मरेंगे।' तिरोत सिंग सिएम (1802-1835) खासी हिल्स स्थित नोंगखलाव राज्य के प्रमुख और स्वतंत्रता सेनानी, तिरोत सिंग सिएम ने ब्रिटिश सेना के साथ बहादुरी से युद्ध किया। हालाँकि उन्होंने वर्तमान बांग्लादेश को असम से जोड़ने के लिए अपने राज्य से होकर एक सड़क निर्माण के लिए ब्रिटिश अधिकारी डेविड स्कॉट को अनुमति दी थी, लेकिन बाद में जब उन्हें अंग्रेजों की साजिश का पता चला, तो उन्होंने उनके साथ युद्ध छेड़ दिया। आधुनिक हथियारों से लैस शक्तिशाली अंग्रेजों के खिलाफ, सिएम ने पारंपरिक तलवारों, ढालों, धनुष-बाणों आदि से युद्ध किया। चार साल तक युद्ध में लगे रहने के बाद, सिएम को अंततः ब्रिटिश सेना ने पकड़ लिया। फिर उन्हें ढाका निर्वासित कर दिया गया जहाँ उन्होंने अंतिम सांस ली। 1988 में, भारतीय डाक ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया। हेमू कालाणी (1923-1943) सिंध में जन्मे हेमू कालानी एक स्वतंत्रता सेनानी और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख छात्र नेताओं में से एक थे। सिंध में आंदोलन को रोकने के लिए, ब्रिटिश सैनिकों को

ट्रेन से सिंध भेजा गया था। ब्रिटिश सेना को रोकने के लिए, कालानी ने अपने साथियों के साथ मिलकर ट्रेन को पटरी से उतारने की योजना बनाई। हालाँकि, इससे पहले कि वे अपनी योजना को अंजाम दे पाते, कालानी पुलिस के हथ्थे चढ़ गए। हालाँकि उन्हें अमानवीय यातनाएँ दी गईं, फिर भी उन्होंने योजना में शामिल अन्य सदस्यों के नाम कभी नहीं बताए। 21 जनवरी, 1943 को उन्हें फाँसी दे दी गई। उस समय उनकी उम्र 19 वर्ष थी। प्रीतिलता वाद्देदार (1911-1932) प्रीतिलता वाद्देदार चटगाँव में एक स्कूल शिक्षिका और ब्रिटिश-विरोधी आंदोलन की एक प्रमुख नेता थीं। सूर्य सेन के क्रांतिकारी समूह की सदस्य के रूप में, उन्होंने 23 सितंबर, 1932 को पहाड़ाली यूरोपियन क्लब पर सशस्त्र हमले का नेतृत्व किया। इस हमले में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई और कई अन्य घायल हो गए। हमलावरों को बाद में ब्रिटिश पुलिस ने पकड़ लिया। इसके बाद हुई गोलीबारी में प्रीतिलता घायल हो गई और जल्द ही ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें घेर लिया। गिरफ्तारी से बचने के लिए, उन्होंने साइनाइड खाकर मौत को गले लगा लिया। मणिपुर में जन्मी रानी गाइदिन्ल्यू (1915-1993) ब्रिटिश राज के विरुद्ध अपने सशस्त्र प्रतिरोध के लिए जानी जाती थीं। 1932 में, ब्रिटिश सेना ने उनके विरुद्ध युद्ध में शामिल होने के कारण उन्हें 'आतंकवादी' घोषित कर दिया। उसी वर्ष उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। भारत की स्वतंत्रता के बाद ही उन्हें रिहा किया गया, जिसके बाद उन्होंने अपने लोगों के उत्थान के लिए काम करना जारी रखा। गाइदिन्ल्यू ने 1993 में 78 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली। खुदीराम बोस (1889-1908) पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर में जन्मे खुदीराम बोस, अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे कम उम्र के शहीदों में से एक थे। मात्र 15 वर्ष की आयु में, वे अनुशीलन समिति में शामिल हो गए और ब्रिटिश राज के खिलाफ कई क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। उन्होंने प्रफुल्ल चाकी के साथ मिलकर 1908 में मुजफ्फरपुर में ब्रिटिश मुख्य मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया। हालाँकि, उनका प्रयास असफल रहा और इसमें गलती से दो ब्रिटिश महिलाओं की मृत्यु हो गई। इसके

कारण खुदीराम को गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में उन्हें मृत्युदंड दिया गया। 11 अगस्त, 1908 को, 18 वर्ष की आयु में, उन्हें फाँसी दे दी गई। अशफाकउल्ला खान (1900-1927) अशफाकउल्ला खाँ एक स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने ब्रिटिश सेना के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। उनका जन्म शाहजहाँपुर में हुआ था। 1922 में चौरी-चौरा कांड के बाद जब महात्मा गांधी ने आंदोलन वापस लेने का फैसला किया, तो अशफाकउल्ला खाँ नाराज़ हो गए। उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन नामक एक संगठन बनाने का फैसला किया। बाद में उन्हें काकोरी ट्रेन डकैती में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और मौत की सज़ा सुनाई गई। 19 दिसंबर, 1927 को उन्हें फाँसी दे दी गई। जतीन्द्र नाथ दास (1904-1929) जतीन्द्र नाथ दास एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था। बाद में वे अनुशीलन समिति में शामिल हो गए। कोलकाता में जन्मे, वे एक मेधावी छात्र के रूप में जाने जाते थे। उन्हें ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के लिए गिरफ्तार किया गया और लाहौर जेल में कैद कर दिया गया। वहाँ कैद के दौरान, उन्होंने भारतीय राजनीतिक कैदियों के लिए समानता की माँग को लेकर 63 दिनों तक भूख हड़ताल की। इस भूख हड़ताल के परिणामस्वरूप, दास ने अंततः 13 सितंबर, 1929 को अंतिम सांस ली। इन सब और इनके जैसे असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों को कोटि कोटि नमन, जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करके हमें आजाद हवा में सांस लेने का अवसर उपलब्ध कराया।



भारत की सैन्य ताकत कितनी मज़बूत

मनोज चौधरी

मुख्य कार्यालय अधीक्षक

अधीनस्थ-वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (समन्वय) कार्यालय
सियालदह, पूर्व रेलवे



विश्व में भारत की सैन्य स्थिति:- भारत की सैन्य स्थिति विश्व की शीर्ष 5 सेनाओं में शामिल है, जिसमें बड़ी संख्या में सक्रिय कार्मिक, हजारों टैंकों और तोपों से सुसज्जित पर्याप्त थल सेना, विविध विमानों से सुसज्जित एक दुर्जेय वायु सेना, तथा विमान वाहक पोतों और पनडुब्बियों सहित बढ़ती हुई नौसेना शामिल है।

भारत की सैन्य शक्ति का विश्लेषण-

भारत की सैन्य रैंक: यह वास्तव में उल्लेखनीय है कि किस प्रकार भारत ने अपनी स्वतंत्रता और दर्दनाक विभाजन के बाद के दशकों में, एक प्रमुख वैश्विक शक्ति बनने के लिए अपनी स्थिति को लगातार मज़बूत किया है।

ग्लोबल फायर पावर रिव्यू के अनुसार, भारत 0.1184 पावर इंडेक्स स्कोर के साथ 145 देशों में चौथे स्थान पर है।

भारत की मज़बूत सैन्य शक्ति लगातार दुनिया की शीर्ष 5 सैन्य शक्तियों में शुमार है। यह कोई नई बात नहीं है, भारत कम से कम दस सालों से शीर्ष 10 सैन्य शक्तियों में शामिल रहा है।

सैन्य ताकत के अलावा, भारत की विशाल जनसंख्या, मज़बूत वित्तीय स्थिति और प्रमुख कोयला उत्पादक के रूप में स्थिति भी इसके महत्वपूर्ण वैश्विक प्रभाव में योगदान करती है।

इसके अलावा, भारत एक परमाणु शक्ति है जिसने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं, जो इसकी वैश्विक रणनीतिक भूमिका का एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है।

भारत सैन्य रैंक-वित्त

प्रमुख क्षेत्रों में भारत की वित्तीय मज़बूती उल्लेखनीय

है। वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की इसकी क्षमता (क्रय शक्ति समता) 13.1 ट्रिलियन डॉलर के साथ बहुत ऊँची है, जो 145 देशों में तीसरे स्थान पर है।

भारत के पास विदेशी मुद्रा और स्वर्ण भंडार भी प्रचुर मात्रा में है, जो कुल मिलाकर 627 अरब डॉलर से अधिक है, जो इसे विश्व स्तर पर पाँचवें स्थान पर रखता है। भारत का रक्षा बजट 75 अरब डॉलर है, जो चौथे स्थान पर है।

हालाँकि इसका बाह्य ऋण 371 अरब अमेरिकी डॉलर है, फिर भी इसकी विशाल अर्थव्यवस्था के संदर्भ में इस पर विचार करना ज़रूरी है। कुल मिलाकर, ये आँकड़े भारत की मज़बूत वित्तीय क्षमता को दर्शाते हैं।

भारत की सैन्य शक्ति नौसेना-

भारत की नौसैनिक शक्ति में कुल 293 संपत्तियाँ शामिल हैं, जो विश्व स्तर पर छठे स्थान पर है और कुल 593,603 टन भार के साथ, यह पाँचवें स्थान पर है। विमानवाहक पोत के विषय में भारत तीसरे स्थान पर है। भारत के बेड़े में 13 विध्वंसक और 14 फ्रिगेट शामिल हैं, दोनों चौथे स्थान पर हैं। उनके पास 18 कॉर्वेट भी हैं, जो पाँचवें स्थान पर हैं, और 18 पनडुब्बियाँ भी हैं, जो सातवें स्थान पर हैं। हमारा गश्ती जहाजों का बेड़ा काफी बड़ा है, जिसमें 135 जहाज हैं, जो 8वें स्थान पर है।

भारत की सैन्य शक्ति, भू शक्ति-

ज़मीनी युद्ध की बात करें तो भारत के पास काफ़ी संख्या में वाहन हैं। उसके पास लगभग 4,201 टैंक हैं, जिनमें से लगभग 3,151 युद्ध के लिए तैयार होने का अनुमान है।

सभी प्रकार के सैन्य वाहनों की कुल संख्या काफ़ी

ज्यादा है, 148,594, जिनमें से लगभग 111,446 तैयार माने जाते हैं। तोपखाने के लिए, भारत के पास लगभग 100 स्व-चालित इकाइयाँ हैं, जिनमें से लगभग 75 तैयार हैं और तोपों की संख्या भी काफी ज्यादा है, लगभग 3,975, जिनमें से लगभग 2,981 तैयार हैं।

इसके अलावा, भारत में लगभग 264 मल्टीपल लॉन्च रॉकेट सिस्टम (एमएलआरएस) हैं, जिनमें से अनुमानित 198 तैनाती के लिए तैयार हैं। ये आँकड़े जमीनी सेना की महत्वपूर्ण क्षमता का संकेत देते हैं।

भारत की सैन्य शक्ति, वायु शक्ति-

भारत की वायु सेना काफी बड़ी है, जिसके पास कुल 2,229 विमान हैं, जिनमें से अनुमानतः 1,672 उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। कुल विमानों के मामले में यह उसे विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर रखता है।

खास तौर पर, भारत के लड़ाकू विमानों के बेड़े में 513 विमान हैं, जिनमें से लगभग 385 युद्ध के लिए तैयार होने का अनुमान है, जिससे वे चौथे स्थान पर हैं। जमीनी हमले के लिए, भारत के पास 130 विमान (लगभग 5.8%) हैं, जिनमें से लगभग 98 तैयार हैं।

उनके परिवहन विमानों का बेड़ा 270 (12.1%) है, जिनमें से लगभग 203 तैयार हैं, जिससे वे इस श्रेणी में चौथे स्थान पर हैं। उनके पास प्रशिक्षण विमानों की भी अच्छी-खासी संख्या है, जिनमें से 351 (15.7%) स्टॉक में हैं और अनुमानतः 263 तैयार हैं, जो छठे स्थान पर हैं।

विशेष अभियानों के लिए, हमारे पास 74 विमान (3.3%) हैं, जिनमें से लगभग 56 तैयार हैं, जिससे वे 5वें स्थान पर हैं। उनके टैंकर बेड़े, जो अन्य विमानों की रेंज बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं, में 6 विमान (0.3%) शामिल हैं, जिनमें से लगभग 5 तैयार हैं, जिससे 11वां स्थान प्राप्त है।

भारत का हेलीकॉप्टर बेड़ा विशाल है, जिसमें 899 हेलीकॉप्टर (40.3%) हैं और अनुमानतः 674 तैयार हैं, जो इसे चौथे स्थान पर रखता है। इसके अलावा, हमलावर हेलीकॉप्टर बेड़े में 80 विमान (3.6%) शामिल हैं, जिनमें से लगभग 60 तैयार हैं, जो इसे विश्व स्तर पर आठवें स्थान पर रखता है।

भारत की सैन्य शक्ति: रसद-

भारत में लगभग 593.7 मिलियन लोगों की विशाल श्रम शक्ति है, जो विश्व स्तर पर दूसरे स्थान पर है।

इसके व्यापारिक समुद्री बेड़े में 1,859 जहाज शामिल हैं, जो इसे 12वें स्थान पर रखता है। देश में 56 बंदरगाह और व्यापारिक टर्मिनल हैं, जो 13वें स्थान पर हैं, और कुल 311 हवाई अड्डे हैं, जो 20वें स्थान पर हैं।

भारत का सड़क नेटवर्क व्यापक है, जो लगभग 63.7 लाख किलोमीटर लंबा है, जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है। इसका रेलवे नेटवर्क 65,554 किलोमीटर लंबा है, जो चौथे स्थान पर है। इसके अलावा, भारत में 14,500 किलोमीटर उपयोग योग्य जलमार्ग हैं, जो इसे दसवें स्थान पर रखता है।



सरदार पटेल विशेष : एकता और वफादारी के प्रतीक 'लौह पुरुष' आज भी क्यों हैं जरूरी?

अपर्णा

चक्रवर्ती पत्नी - तन्मय चक्रवर्ती लोको पायलट
(गुड्स)सी सी (आर) पू.रे./सियालदह



लौह पुरुष वल्लभ भाई पटेल एक ऐसी शख्सियत हैं, जिनकी दूरदर्शिता और अदम्य इच्छाशक्ति आज भी भारत के एकीकरण की कहानी बयां करती है। मेरे द्वारा लिखित यह लेख सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन, उनकी ओर से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका और आधुनिक भारत के निर्माण में उनके योगदान पर प्रकाश डालता है। पटेल को 'भारत के लौह पुरुष' के रूप से जाना जाता है। पटेल ने भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 500 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में मिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वल्लभभाई झावेरभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को गुजरात के नडियाद गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। कठोर परिश्रम, अनुशासन और आत्मनिर्भरता जैसे गुण, जो बाद में उनके नेतृत्व और सेवा के दृष्टिकोण को परिभाषित करते थे, उनमें बचपन से ही दिखाई देने लगे थे। वल्लभभाई अपने पिता झावेरभाई पटेल से ही प्रेरित होकर देशभक्ति के जज्बे से लबालब हो गए थे। उनके पिता ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सेना में सेवा की थी। इन शुरुआती अनुभवों ने उनमें न्याय, सम्मान और लचीलेपन के प्रति एक मजबूत प्रतिबद्धता को बढ़ावा दिया। कांग्रेस के सबसे भरोसेमंद नेताओं में से एक भारत के स्वतंत्रता संग्राम में वल्लभभाई पटेल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी और वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सबसे भरोसेमंद नेताओं में से एक के रूप में उभरे। एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उनकी यात्रा को 1918 के खेड़ा सत्याग्रह के साथ गति मिली, जहां उन्होंने महात्मा गांधी के साथ एक सफल विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया। बाद और अकाल से

प्रभावित खेड़ा क्षेत्र को गंभीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, फिर भी ब्रिटिश अधिकारियों ने भू-राजस्व संग्रह को माफ करने से इनकार कर दिया। पटेल के मार्गदर्शन में खेड़ा के किसानों ने असहयोग और अवज्ञा का एक अभियान चलाया, जिसके कारण अंततः करों को निलंबित कर दिया गया, जिससे एकता और अहिंसा की शक्ति का पता चला। बारदोली सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए, पटेल 1928 के बारदोली सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बारदोली में किसानों पर अत्यधिक भूमि कर का बोझ था जिसे वे खराब फसल के कारण वहन नहीं कर सकते थे। पटेल के दृढ़ नेतृत्व में, किसानों ने एक अहिंसक आंदोलन शुरू किया, करों का भुगतान करने से इनकार कर दिया और ब्रिटिश वस्तुओं और सेवाओं का सामूहिक बहिष्कार किया। आंदोलन की सफलता ने पटेल को 'सरदार' (नेता) की उपाधि दिलाई, जो लोगों के उनके मार्गदर्शन और साहस के प्रति सम्मान को दर्शाता है। इन आंदोलनों में शामिल रहने के कारण उनकी भूमिका ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को परिभाषित करने वाले प्रमुख आंदोलनों तक विस्तार किया, जिसमें 1930 में नमक मार्च और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शामिल थे। अन्य नेताओं के साथ, पटेल के प्रयासों ने स्वतंत्रता आंदोलन के जनाधार को मजबूत किया और उन्होंने जमीनी स्तर पर समर्थन जुटाने, अनुशासन बनाए रखने और आम नागरिकों में उद्देश्य की भावना पैदा करने में खुद को कुशल साबित किया। उनकी मजबूत संगठनात्मक क्षमताओं और कार्य के प्रति समर्पण ने उन्हें कांग्रेस के भीतर एक अनिवार्य व्यक्ति और महात्मा गांधी का एक विश्वसनीय सहयोगी बना

दिया। 'भारत के लौह पुरुष' की उपाधि कैसे मिली? सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने दृढ़ संकल्प, अडिग इच्छाशक्ति और नेतृत्व के प्रति सैद्धांतिक दृष्टिकोण के कारण 'भारत के लौह पुरुष' की उपाधि अर्जित की। अपने पूरे राजनीतिक जीवन में, पटेल ने स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के बाद के शासन दोनों की चुनौतीपूर्ण मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक शक्ति और लचीलेपन का उदाहरण दिया। नेतृत्व के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यावहारिक था फिर भी समझौता न करने वाला था, उन्होंने व्यक्तिगत या राजनीतिक हितों से ऊपर उठकर राष्ट्र के कल्याण को रखा, कठिन निर्णय लिए जिनके लिए सहानुभूति और सिद्धांतों के सख्त पालन के संतुलन की आवश्यकता थी। पटेल में क्या खास था? पटेल की एक परिभाषित विशेषता अधिकार के साथ सहानुभूति को संयोजित करने की उनकी क्षमता थी। वह ग्रामीण आबादी के संघर्षों की अपनी गहरी समझ के लिए जाने जाते थे और आम लोगों को सशक्त बनाने के लिए लगातार काम करते थे। बारडोली सत्याग्रह जैसी घटनाओं के दौरान उनके नेतृत्व ने न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और वंचितों की ओर से दमनकारी ताकतों के खिलाफ खड़े होने की उनकी इच्छा को रेखांकित किया। हालांकि, पटेल ने अनुशासन और व्यवस्था की भावना को भी बरकरार रखा, इस बात पर जोर देते हुए कि ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के कारण भारत को आंतरिक कलह या अव्यवस्था से ग्रस्त होने के बजाय एक स्थिर और समृद्ध भारत बनना चाहिए। पटेल ने खुद को दूरदर्शी नेता साबित किया अपनी प्रशासनिक भूमिकाओं में, पटेल ने खुद को एक सक्षम और दूरदर्शी नेता साबित किया, जो अक्सर सकारात्मक परिणाम लाने के लिए चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में कदम रखते थे। जवाबदेही और दक्षता पर जोर देते हुए एक ऐसी प्रणाली का निर्माण करते हुए, भारतीय नौकरशाही को आकार देने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में, पटेल कई महत्वपूर्ण नीतियों के लिए जिम्मेदार थे, उन्होंने एक एकीकृत और कार्यात्मक लोकतांत्रिक राज्य की नींव रखी। शासन के प्रति उनका दृष्टिकोण कठोर और समावेशी दोनों था, जो एकता और प्रतिबद्धता के स्तर को मूर्त रूप देता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी नेताओं को

प्रेरित करता रहता है। 500 से अधिक रियासतों को भारतीय संघ में मिलाना, सरदार वल्लभभाई पटेल की सबसे असाधारण उपलब्धियों में से एक है। यह अत्यधिक जटिलता भरा कार्य था, जिसके लिए कूटनीति और दृढ़ नेतृत्व दोनों की मांग थी। 1947 में स्वतंत्रता के समय, अंग्रेजों ने इन रियासतों को भारत या पाकिस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया। इसने भारत की एकता के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश की, क्योंकि हैदराबाद, जूनागढ़ और जम्मू और कश्मीर जैसे कुछ राज्यों ने स्वतंत्रता या पाकिस्तान के साथ गठबंधन करने पर विचार किया, जिससे देश के अलग-अलग क्षेत्रों में बंटवारे का खतरा था। भारत के पहले गृह मंत्री और रियासत मंत्री के रूप में, पटेल ने रणनीतिक दूरदर्शिता, अनुनय और, जब आवश्यक हुआ, दृढ़ता के संयोजन के साथ इस स्मारकीय कार्य को पूर्ण किया। उन्होंने इन राज्यों के शासकों को भारत में शामिल होने के लिए मनाने के लिए एक वरिष्ठ भारतीय सिविल सेवक, वी.पी. मेनन के साथ मिलकर काम किया। पटेल और मेनन ने रियासतों के शासकों की देशभक्ति, आर्थिक हितों और सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए उनसे एक एकीकृत भारत के लाभों को देखने का आग्रह किया। उनका राजनयिक दृष्टिकोण काफी हद तक सफल रहा, क्योंकि उन्होंने संघर्ष का सहारा लिए बिना अधिकांश शासकों का सहयोग प्राप्त कर लिया। पटेल और महात्मा गांधी स्वभाव और दृष्टिकोण में अंतर के बावजूद पटेल और महात्मा गांधी का रिश्ता गहरे सम्मान और सौहार्द का था। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के जनक गांधी, पटेल को अपने सबसे भरोसेमंद और वफादार सहयोगियों में से एक मानते थे। 1918 के खेड़ा सत्याग्रह के दौरान उनका बंधन और मजबूत हुआ, किसानों के बीच पटेल के नेतृत्व और अहिंसक विरोध के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने गांधी को बहुत प्रभावित किया। उस समय से पटेल, गांधी के सबसे मजबूत समर्थकों में से एक बन गए और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक अग्रणी नेता बन गए। पटेल के दर्शन पर गांधी का प्रभाव महत्वपूर्ण था। हालांकि पटेल व्यावहारिक थे और अक्सर अधिक प्रत्यक्ष दृष्टिकोण में विश्वास करते थे, लेकिन वे अहिंसा और नैतिक अधिकार के गांधी के सिद्धांतों का सम्मान करते थे। पटेल

व्यवहारिक थे और आर्थिक विकास पर केंद्रित थे, मतभेदों के कारण कभी-कभी घर्षण होता था, खासकर स्वतंत्रता के बाद, जब दोनों नेताओं ने नीतियों और प्रशासनिक फैसलों पर अलग-अलग विचार रखे। पटेल व्यावहारिक थे, राष्ट्रीय सुरक्षा, आंतरिक स्थिरता और आर्थिक विकास पर केंद्रित थे, जबकि नेहरू अपने दृष्टिकोण में आदर्शवादी और वैश्विक थे, विश्व मामलों और समाजवाद में भारत की भूमिका पर जोर देते थे। फिर भी, दोनों नेताओं ने विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद भारत के सामने आने वाली विकट चुनौतियों के सामने एकता और सहयोग की आवश्यकता को पहचाना। उदाहरण के लिए, रियासतों के एकीकरण के लिए पटेल का दृष्टिकोण सतर्क कूटनीति के लिए नेहरू की पसंद से अधिक मुखर था, फिर भी नेहरू ने इस क्षेत्र में पटेल की विशेषज्ञता का

सम्मान किया और उन्हें कार्यभार संभालने की अनुमति दी। 1950 में पटेल का आकस्मिक निधन हो गया, इन मतभेदों के बावजूद, दोनों नेताओं ने राष्ट्र के प्रति एक-दूसरे के समर्पण के लिए गहरा सम्मान साझा किया। पटेल नेहरू को प्रधान मंत्री के रूप में स्वीकार करने के लिए जाने जाते थे, वो राष्ट्रीय हित के लिए व्यक्तिगत या वैचारिक मतभेदों को दरकिनार करते थे। नेहरू ने भी पटेल के अनुभव को महत्व दिया, अक्सर महत्वपूर्ण मामलों पर उनकी सलाह लेते थे। 1950 में पटेल के आकस्मिक निधन ने नेहरू को भारत के निर्विवाद नेता के रूप में छोड़ दिया, लेकिन उनकी मृत्यु नेहरू को बहुत प्रभावित की, उन्होंने स्वीकार किया कि पटेल का योगदान और उनकी 'लौह इच्छाशक्ति' राष्ट्र को आकार देने में सहायक थी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर : एक विराट सत्ता (पृष्ठ 19 का शेषांश)

'स्वदेश', 'प्रकृति', 'वसंत', आदि। यह विभाजन सुविधा के लिए है। प्रत्येक गीत में एक आन्तरिक तार और लय है, जो एक दूसरे से जुड़े हैं, इस आन्तरिक लय की पहचान आवश्यक है। अपने को तिरोहित करने, स्व-बोध एवं स्व-आग्रह को समाप्त किये बिना कोई मधुर संगीत झंकृत नहीं हो सकता। मनुष्य का मनुष्य से, समस्त सृष्टि से एकाकार होना प्रमुख है। यह जानना दिलचस्प होगा कि रवीन्द्र के विश्व के जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों – आइन्स्टाइन, रोम्यॉ रोला, डब्ल्यू बी. येट्स, एजरा पाउण्ड, महात्मा गाँधी आदि से जो संबंध, संपर्क थे और शांतिनिकेतन से जुड़े देश-विदेश के विविध क्षेत्रों के जो प्रमुख व्यक्ति – अमर्त्य सेन, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सत्यजीत राय, बलराज साहनी, शिवानी, नन्दलाल बसु, विनोद बिहारी मुखर्जी, रामकिंकर बैग, जी सुबह्मण्यम, शंखों चौधरी, तैयाब मेहता हैं, उन सब पर रवीन्द्रनाथ का कैसा प्रभाव पड़ा? रवीन्द्रनाथ प्रत्येक दृष्टि से निर्माता थे। उनका चिंतन और विचार क्षेत्र व्यापक है। अदृश्य सत्ता और ईश्वरीय सत्ता के प्रति एक गहरे खिंचाव और आकर्षण के बाद भी उनका जीवन और साहित्य इसी जगत से जुड़ा है। इस भौतिक जगत को सुन्दर और बेहतर बनाना ही उनका लक्ष्य था। उन्होंने परम सत्ता को, उसकी लीला और अभिव्यक्ति की इसी भूलोक में देखा, समझा और बताया। गाँधी और रवीन्द्र दो ऐसे महापुरुष हैं, जिनके बीच लम्बे समय तक संवाद

कायम रहा। गाँधी को 'महात्मा' उन्होंने ने ही कहा था और गाँधी ने उन्हें 'गुरुदेव' कहा था। यह राजनीति के साथ कला, साहित्य संस्कृति और आध्यात्म का संवाद था, जो आधुनिक भारत का अकेला उदाहरण है।

निराला ने रवीन्द्रनाथ को 'हृदय की भाषा के नायक', छंद के लिए रत्नाकर, 'एक प्रतिभाशाली महाकवि' कहा है, उनके अनुसार रवीन्द्रनाथ ने अपनी कविता में – 'भारतीय उपनिषद् दर्शन और पश्चिमी कवियों के प्यार को मिलाकर अपना एक नया दर्शन तैयार किया है।' अहम बात यह है कि रवीन्द्रनाथ का साहित्य 'मानवता को संकट से बचाने के लिए' है। उसके अंतः स्वर को, पीड़ा और करुणा को समझना जरूरी है। हम सब जिस सर्वहारा शब्द का प्रयोग करते हैं, वह सर्वहारा शब्द रवीन्द्रनाथ की देन है। उनका साहित्य-संसार विशाल है। इक्कीसवीं शताब्दी का भारत और विश्व बहुत कुछ ग्रहण कर सकता है। निजीकरण, उदारीकरण, भूमंडलीकरण के इस अति आधुनिक युग में वे पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। वे इस पृथ्वी को, मानव जाति और प्रकृति को अधिक महत्व देते हैं, जो आज खतरे में हैं। रवीन्द्रनाथ एक व्यक्ति, साहित्याकार या कवि नहीं एक विचार हैं, जिन्होंने युग निर्माण किया। उनका विराट व्यक्तित्व युगों-युगों तक मानव समाज को उनके कष्टों से मुक्ति हेतु संघर्ष करता रहेगा और वे मनुष्यता के लिए एक विराट सत्ता बने रहेंगे।

महाकुम्भ : एक स्मरण



रितेश कश्यप
सपुत्र-बेला कश्यप
राजभाषा अनुभाग, सियालदह

प्रथम यज्ञ भूखंड धरा पर आर्य का आगाज है,
है पावन संगम की धरती, ये प्रयागराज है, ये
प्रयागराज है, ये प्रयागराज है.....

14 जनवरी के दिन मैं ये गाना सुन रहा था तभी मेरे मन में ये विचार आया कि क्यों न मैं भी “कुम्भ मेला” में जाऊँ। मैंने तुरंत ही अपनी माँ को फोन किया और पूछा – माँ क्या मैं कुम्भ मेला में जाऊँ ? माँ कुछ क्षण चुप रही, फिर बोली – लेकिन तुम्हारी पढ़ाई है ना ? मैंने झट से कहा – मैंनेज कर लूंगा, आप निश्चित रहो, वैसे... आप ना कहोगे तो मैं नहीं जाऊंगा। माँ हसते हुए हाँ कह दी और कहाँ – “कुम्भ मेला” का मतलब भी जानते हो ? मैंने कहा – नहीं, आप बता दो। माँ बोली – कुम्भ मेला एक बड़ा धार्मिक मेला है जो हर 12 वर्षों में भारत के चार स्थानों- प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में से एक पर आयोजित होता है। ‘कुम्भ’ मतलब “घड़ा या कलश” इसका अर्थ, अक्सर पानी के विषय में या पौराणिक कथाओं में अमरता (अमृत) के बारे में बताया गया है तथा ‘मेला’ का अर्थ सभा या किसी एक स्थान पर मिलना है। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है “अमरत्व का मेला”। इस मेले में भारत क्या विदेशों से भी लोग आते हैं क्योंकि यहाँ स्नान करना बहुत ही पुण्य माना जाता है। माँ की ये बातें सुनकर कुम्भ मेला में जाने की इच्छा और प्रबल हो गयी।

मेरे दो दोस्त उत्सव और सक्षम के साथ मिलकर कॉलेज की रूटीन के हिसाब से 06 फरवरी को जाने और 09 फरवरी कुम्भ से वापस आने की योजना बनायी। दिन बीतता गया। इसी बीच मैंने अपनी रोमी दीदी से बात की जो रेल सुरक्षा बल में कार्यरत है और संयोग से उनकी ड्यूटी प्रयागराज में ही लगी थी, इससे हमें और भी खुशी

हुई। हम तीनों दोस्तों की ये पहली ऐसी यात्रा थी जिसमें परिवार के बगैर जा रहे थे। कुम्भ जाने की सोच कर ही हम तीनों रोमांचित तो हो रहे थे परंतु हमारी यात्रा इतनी सहज होने वाली नहीं थी।

एक तरफ कॉलेज का प्रोजेक्ट 09 फरवरी के अंदर जमा करना था तो दूसरी तरफ 05 फरवरी को रुमी दीदी का कॉल आया कि वो वापस जयपुर जा रही है क्योंकि उनकी दादी का निधन हो गया है। हालाँकि दीदी ने कहा कि वो अपने साथी को बोल देगी। कोई असुविधा नहीं होगा। परंतु माँ चिंतीत हो रही थी। वैसे तो मैं B.Tech 3rd year का छात्र हूँ पर माँ के लिए हर बच्चा छोटा ही रहता है इसलिए उनकी चिंता उचित थी। कुछ पल के लिए तो मैं भी विचलित हो गया था परंतु बरबस ही माँ की एक बात याद आ गयी कि- ‘दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं’।

06 फरवरी को AI का प्रोजेक्ट जमा कर दिल्ली स्टेशन की तरफ भागे। स्टेशन पर भीड़ काफी थी, चूँकि हमारा टिकट कन्फार्म था इसलिए हम तीनों आराम से ट्रेन में बैठ गये। तभी माँ को कॉल आया कि रंजीत का फोन नं. दे रही हूँ बात कर लेना। (रंजीत भैया, जिनका पूरा नाम रंजीत कमल है जो सियालदह मंडल में मुख्य स्वास्थ्य एवं मलेरिया निरीक्षक के पद पर कार्यरत हैं) तभी मुझे ऐसा महसूस हुआ कि माँ साथ न होते हुए भी साथ है। हम तीनों दोस्त काफी खुश थे। सुबह 05.30 में रंजीत भैया का कॉल आया, कहाँ- बिट्टू 6 नम्बर प्लेटफार्म पे आ जाओ। प्लेटफार्म पर मैंने पहली बार रंजीत भैया को देखा और मुस्कुराते हुए मन ही मन सोचने लगा – भगवान तो मैंने देखा नहीं शायद आज भगवान रंजीत भैया के रूप में आये हैं।

भैया ने हमतीनों को नाश्ता करवा के महाकुम्भ में स्नान के लिए भेज दिया। हम तीनों पैदल ही निकल पड़े कुम्भ मेला की ओर। कुंभ मेला की खुबसुरती देखते ही बन रही थी। सच में यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है। यह मेला भारत की संस्कृति और परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोगों को एक साथ लाता है।

हम संगम घाट पर स्नान कर हनुमान मंदिर, सरस्वती मंदिर और शिव मंदिर के दर्शन कर वापस भैया के पास लौट आये। लगभग 25 किलोमीटर पैदल चले थे, इसलिए खाना खाने के बाद हम तीनों दोस्त जो सोये शाम के 6.30 बजे जागे। उसके बाद स्टेशन के आस-पास ही घुमने निकल पड़े। वापस आने पर भैया ने बताया कि वो आज ही कोलकाता के लिए रवाना हो रहे हैं। भैया की ड्यूटी आज तक ही थी इसलिए उन्हें कोलकाता जाना पड़ा। रंजीत भैया मुझे हमेशा याद रहेंगे। मैं जब भी कोलकाता गया तो भैया से जरूर मिलूंगा।

दूसरे दिन सुबह हम तीनों दोस्त फिर से घुमने निकल पड़े शिव नगरी प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ मेला की तरफ, जहाँ रुद्राक्ष की मालाओं से बने 12 ज्योतिर्लिंग दूर-दूर से श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। हम तीनों जब वहाँ पहुँचे तो मन हर्षित हो गया। वहाँ एक साधु

बाबा से हमारी बातें भी हुई उन्होंने बताया कि जो रुद्राक्ष की मालाएँ ज्योतिर्लिंग पर लिपटी हुई हैं, ये मालाएँ भिक्षा मांगकर एकत्र की गई हैं। उन्होंने और भी बहुत सारी बातें बतायीं। करीब 15-20 मिनट बातें हमतीनों ने साधु बाबा का चरणस्पर्श कर अन्य मंदिरों के दर्शन के लिए आगे बढ़े ही थे कि तभी बाबा ने आवाज दिया और हम तीनों के हाथों में एक-एक रुद्राक्ष देकर सदा सुखी रहने का आशीर्वाद दिया। हमतीनों दोस्त एक-दूसरे की तरफ आश्चर्य से देख रहे थे क्यों कि ये हमारे लिए एक अविश्वशनीय सुखद घटना थी। उसके बाद हमने और कई मंदिरों (नाग वासुकी, तक्षक, रामजानकी) का दर्शन किया। दो दिनों में ही करीब 70 किलोमीटर पैदल चले थे।

अब बारी थी वापस लौटने की। प्लेटफार्म पर जो भी ट्रेन आ रही थी सब में इतनी भीड़ देखकर हमारी तो हालत खराब हो गई। तभी उत्सव ने कहाँ - स्पेशल ट्रेन आने का अनाउसमेंट हुआ है। हम तीनों उस पे चढ़ गए। माँ हम तीनों से फोन पर बराबर संपर्क में थी। वही हमारी हिम्मत थी। ऐसा लग रहा था जैसे माँ-पापा मेरे आस-पास ही हैं। मुझे बचपन की वो बातें याद आ रही थी जब मैं स्कूल में भी माँ को देखना चाहता था, इसलिए उनको ऑफिस जाने से रोकता था और माँ बहुत प्यार से कहती- मैं तो हमेशा साथ हूँ, बस तुम्हें दिखाई नहीं देती हूँ। खैर, उस स्पेशल ट्रेन से

हम कानपुर पहुँचे और वहाँ से सम्पर्क क्रांति सुपर फास्ट ट्रेन पकड़ कर दिल्ली, फिर विश्वविद्यालय पहुँच कर ही चैन की साँस ली। खट्टी-मीठी यादों के साथ ये सफर हमें जिंदगी भर याद रहेगा। कई लोग ऐसे मिले जिन्होंने हमारी मदद की, तो कुछ ने परेशान किया, पर कहते हैं न- 'अंत भला तो सब भला' और मैं मन ही मन सोच रहा था-

मेरी यात्रा अभी अधूरी है,
सफलता से अभी भी दूरी है।
जो छु लू पावं माँ-पापा के,
मेरी हर मनोकामना पूरी है ॥



मंडल रेल प्रबंधक के नेतृत्व में सियालदह मंडल में स्वतंत्रता दिवस 2025 का भव्य आयोजन एवं समारोह की झलकियाँ



सियालदह मंडल द्वारा आयोजित काव्य गोष्ठी में कवियों को सम्मानित करते हुए मंडल रेल प्रबंधक महोदय



मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में सियालदह मंडल द्वारा हिंदी पखवाड़ा-2025 के अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ



बाल दिवस के अवसर पूर्व रेलवे महिला कल्याण संगठन, सियालदह द्वारा आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ



सियालदह मंडल में अक्षमता विषय पर संगोष्ठी एवं दिव्यांगजनों के आरक्षण रोस्टर का रख-रखाव पर सेमिनार



सियालदह मंडल में ओपीएस एवं यूपीएस पर आयोजित सेमिनार



सियालदह मंडल द्वारा आयोजित संरक्षा सेमिनार



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम एवं प्रतियोगिता की झलकियाँ



मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में सियालदह मंडल द्वारा हिंदी पखवाड़ा-2025 के अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

